

नरेन्द्र मोदी

जनता जनार्दन स्वयंसेवक



सुरेश मधुसूदन देव

Narendra Modi - by Suresh M. Deo.

Published by : Suresh M. Deo
United States
1231 Scarlet Drive
Addison, IL 60101

India
6/A, Vrindavan (2) C.H.S.
Panchavati, Pashan Road,
Pune (M.S.) 411008.

Contact : sureshdeo32@gmail.com

Copyright © 2015 by Suresh M. Deo

Font : Arial
Shree Lipi - 708

Size : 12 pt
Size : 15 pt.

Editing : Deepak S. Deo

Formatting (Marathi & Hindi) : Sai Samarth Printers,
Pune, India.

Cover and Sketches : Usha Deo and Vikas S. Deo

Dedicated to my wife **Usha** and our
three sons **Deepak, Vikas and Sagar**.

Acknowledgments

This is a non traditional acknowledgement of the sources of wisdom from which this book has derived glimpses of inspiration. Witnessing each experience in life serves as सद्गुरु ज्ञानरूप दर्शन :

- The immediate family environment and the larger family of relationships and interactions.
- Silent personal interactions (दर्शन) with Shri Ramana Maharshi (www.sriramanamaharshi.org) and Meherbaba (www.meherbaba.com.ar)
- ishayoga.org and guruma.com
- 82 years of personal life experiences, which include listening and experiencing the silent whisper of Ellora caves in Maharashtra, Chitrakoot falls, lush green forests and spontaneous laughter of the tribals of Bastar, Chhattisgarh, the lapping waves of the Arabian sea at Juhu beach in Mumbai where I collected 100-Seashells, the unconditional love and patience exuding out of the female of every life species for its infant , the eighty year old Gorilla in the St. Louis zoo that looked at us wondering why are these stupid humans staring at me, watching the first Lunar landing live on TV, and the welcoming gesture of the Statue of Liberty with the rising Sun and full Moon simultaneously hanging out in the sky as our ship approached the Hoboken pier in US bearing me and my perpetual companion called Curiosity. For these self revealing life experiences, I feel forever grateful.



Introduction

This book is about the flavor of India's new leadership under the stewardship of Prime Minister Narendra Modi representing the Bharatiya Janata Party (BJP) that started its governance from 26th May, 2014 after winning a comfortable majority vote from the consensus of 1.25 billion citizens. The new perceptible ambience and mood feels like a turning point in the consciousness of democratically governed India. नरेंद्र मोदी और भारतीय जनता के बीच एक कुदरती रिश्ता महसूस हो रहा है ।

Instead of being a biography, this book presents a running snapshot of Mr. Modi's personal quotes and comments along with compositions of this book's author reflecting the Nation's past and current mood. In another perspective, this book is a biography of consciousness symbolic of the word Bharat (भारत).

I am no political party or pandit, nor a hero worshipper, nor any ones चौकीदार या चमचा, but just an Owl (उल्लू) sitting peacefully on the branch of my tree and watching the events on the ground. Oh! what fun it is to watch without any judgement call !

The dynamics of time is the ultimate Judge and Jury.

Suresh M. Deo
sureshdeo32@gmail.com
26 May 2015



Table of Contents

Flora and Fauna of Native Culture

वतन की राहें

जनता जनार्दन स्वयंसेवक

मैं थक गया हूँ : I am tired

Generation Gaps : Our India Today

अंदाज और अहसास

मानवता की सुवर्ण सोच

GOD DAMN RELIGION

Cauldron of Humanity

वैश्विक सोच : Universal Thoughts

Intuitive Wisdom of Children

भारत का सूक्ष्म इतिहास : India's Subtle History

Randevu and Tryst with Destiny : भारत भाग्यविधाता

Cleanliness : साफसफाई

Progressive Revelations

ए मेरे तन, मन और वतन के लोगों

त्रिवेणी संगम : Trinity of Universality

ब्रह्मचर्य : Celibacy

Handloom Weaver

जीवन में कुछ करने का सपना देखो : Dream to do something

Gross Domestic Problems (GDP)

Being your own Self

Terrorism

अहमदाबादी नरेंद्र मोदी

मॉडिफिकेशन

कहत नरेंद्रभाई

हिसाब - किताब

Political Trail

Sense of History

दो नरेंद्र : Two Narendra

काम करने का और करवाने का तरीका

कचरा और सफाई : Trash and Cleanliness

जागृती : Self Enlightenment

गरमा गरम चाय

Convocation Address

Motto, Wisdom, Manifesto, and Invocation

India's successful Orbiter Mission to Mars

NRI and OCI

Aspirations : आकांक्षा

हमारा वतन

Duet : जुगलबंदी

Bastar, Chhattisgarh

Foreign Relationships

Seamless Generations

Our India

Healthy Opposition

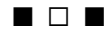
दवा और दुआ : Medicine and Grace

धर्म, अध्यात्म और स्वयंसेवक

दिल का दरबार और दिल्ली दरबार

मानस सरोवर

Conclusion



Flora and Fauna of Native Culture

The Native land (वतन, मातृभूमी, जन्मभूमी) of each individual has multiple languages of expression, each with its precious spirit for effective communication. Therefore it behooves to know a couple of native languages to experience the spirit of local environment within which resides universal wisdom of life. A thought finds suitable expression through appropriate words to enjoy its spirit.

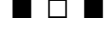
Knowledge of multiple native languages is not for display of scholarship, but essentially to experience the spirit of life in its fuller dimensions.

After all, words are simply sounds of expression to which we give meaning. Our three year old granddaughter, Arielle, chooses to describe her performance on the potty toilet as pee-pee and poo-poo. This is the simple reason Hindi, English and Marathi words have been used in this book to conveniently communicate thoughts. It embodies the spirit of Trinity; the synthesis of information, experience, and wisdom, which is symbolized by the words यमुना, गंगा, सरस्वती to the native residents of India identified as भारतीय.

The words such as Grace, Revelation, साक्षात्कार, दुवा, आशीर्वाद often convey different vibrations of self ennobling thoughts or experiences. This book is mostly a biography of an all inclusive conscious awareness.

While commenting on the preprint copy of this book, my friend Shri Shastri (Oakville, Ontario, Canada) had used

the expression that this style of writing by conveniently using either Hindi, English or Marathi words is using the ink of classic 'त्रिवेणी भाषा संगम'.



वतन की राहें

जिस मिट्टी से हम बने हैं, वह हमारा वतन।
जिस मिट्टी से निकला अनाज हमारे पूर्वजोंने खाया वो हमारा वतन।
उसी मिट्टी के कारण, हमारे बच्चे पैदा होकर पलेंगे और फूलेंगे।
वतन एकही मनोभाव से, सब जीवों को खिलाता, पिलाता और पोसता।

वतन, माँ और मातृभूमि सदा एकही सोचमें, त्रिवेणी संगम है।
परदेश जाकर नागरिकता एक पर्वसे बदल सकती है,
पर दिलसे जुड़ा वतन, सदा वही बना रहता है।

इ. स. ४००० पूर्व (4009 BCE) ऋग्वेदी ग्रंथोंमें भारतवर्ष अथवा आर्यावर्त के मुख्य का जिक्र किया गया है, 'तिब्बेट से श्रीलंका तक और अफगाणिस्तान से म्यानमार तक' अफसोस हैं की उसके बाद आजतक, भारतके टुकड़े, टुकड़े होते रहे हैं, कुछ यहाँ गिरे और कुछ वहाँ रहे।

इन्सान को 'मैं और मेरा' इस भाव में बटवारा करने का बड़ा शौक होता है।
सांप्रदायिक धर्म के नाटकों में, ईश्वरतत्त्व और वतन का भी बटवारा करते रहते हैं। अहंकार और प्यार के टुकड़े टुकड़े करके खानेमें मजा आता है लोगों को। अफसोस है कि, एकही हिन्दी महासागर का नमक खाकर, कुछ नागरिक नमकहराम।

देश के बटवारे से जो वतन को मजबूरी से खोता है, वो दुःखी,
वही दुःख, पास के रिश्ते बिछडनेसे।
जो वतन को भूल सकता है, वो अक्वल हरामी।
हरामी (हाय राम) वो जो रामतत्त्व के ज्ञान बिना जीता है

अथवा मरा जैसे जीता है।
तन और मन के निर्मल भावसे,
वतन के सब जीवों की और लोगों की सेवा करनेवाला,
जनता जनार्दन स्वयंसेवक होता है ।
वतन की राहमें, वतन के नौजवान शहीद हों।
शहीद वो होते हैं
जो जान की बाजी लगाकर सत्कर्मसे जुड जाते है ।

वतन एक सांस्कृतिक सोच बन जाती है,
जिसके सहारे हम जीते है, फूलते हैं, फलते हैं,
और अन्तमें आत्मपरिवर्तनके लिए प्राप्त होते हैं।

नीलगगनके तले, हम सब छोटे छोटे बालक हैं ।
वतन और माँ की आँस सदा पुकारे, बेटा तुम्हें आनाही होगा।

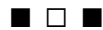


जनता जनार्दन स्वयंसेवक

जनता जनार्दन स्वयंसेवक, वो जीव होता है जो योगदान से जनता की सेवा करता है; उस वैश्विक शक्ति की अनुभूति पाने, जिसके माध्यम से हमारा जन्म होता है, हम जीते हैं और अंतमें हमारा परिवर्तन होता है। हरेक जीव के बढने में, चेतना रूप में, एक सूक्ष्म-बिंदु है, जिसे भारतीय संस्कृतिमें 'हृदय' माना गया है, its not requiring to the Heart muscle that throbs automatically through a lifetime. यह सूक्ष्म-बिन्दु अथवा हृदय उसी चेतना का प्रतिबिम्ब है जिसमें सारा विश्व समाया गया है; जैसे सागर के एक बूंदमें सारा सागरतत्त्व समाया होता है।

स्वयंसेवक, खुदपर पूरा भरोसा रखकर, और कर्मफल के इच्छा बिना, निरंतर जीवनकार्य करता रहता है। हरेक स्वयंसेवक, स्त्री या पुरुष, पुरुषार्थ अदा करने का अधिकारी है। हरेक जीव की माता, सहजता से हरपल पुरुषार्थ अदा करती रहती है। इस्लाम में एक कहावत है 'माँके पैरों तले ही स्वर्ग अथवा मिश्र है।' भारत एक गहरी वैश्विक सोच है, सम्पद्राय नहीं।

जनता जनार्दन भाव से वतन की सेवा करनेवाला हरेक रहिवासी, भारत भाग्यविधाता और भारतरत्न है।



मैं थक गया हूँ : I am Tired

आज ४ दिसम्बर २०१३ का शुभदिन हैं
मेरी केवल ८१ साल की आयुमें
हमारे देश के खोखल नारे और सद्भाव के बीच
एक गहरी खाई नजर आती है ।
इस गहरी खाई को देखकर,
सर जो मेरा चकराए, और दिल डूबा जाए ।
मैं एक थकावटसी महेसूस कर रहा हूँ ।
शायद चम्पी और मालिशकी जरूरत हैं !

सालोंसे, मैं सुनता आ रहा हूँ
मेरा भारत महान ! वो भी टुक के पीछे लिखा !
मेरा भारत महान, मेरी संस्कृती महान
ऊंचे से उंचा मेराही भगवंत
मेरा धर्म महान, मेरे धर्मग्रंथ महान
मेरा धर्म, शांतिस्वरूप शिवसागर है
मेरी राजकीय पार्टी महान, मेरा नेता महान

मेरी केवल ८१ साल की उम्रमें
ब्रिटिश और हिन्दुस्तानी स्वतंत्र राज्यमें भी
सूअर और गाय की हत्या के बहाने
इन्सान की कल्लें देखकर, मैं थक गया हूँ

मेरी भाषा और मेरा भाषावादी मुल्ख महान
हमारे रिवाज महान और हमारी संस्कृति महान कहते हुवे,

हमारी खुद की शूद्र चाल और चलन खुद को महसूस होती नहीं ।
ये दृश्य देखकर मैं थक गया हूँ ।

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और जात-पात के निरंतर झगडे
अफसोस है, कि हमारे वतन के लोगों की जीवनशैली हो बैठी है ।
रिश्त देना और लेना, काम किये बिना दाम लेना चलता ही है
यह रोजाना रिवाज और मनःस्थितीको देखकर, मैं थक गया हूँ ।

भिखारियों की तादाद में लोग भेडियो जैसे
मंदिर, मस्जिद और चर्च के चक्कर लगाते हैं
दोनों हाथ फैलाकर, भगवान से दया और दुआए माँगते,
डरते हुए, खुदपर भरोसा ना करते हुए, सदा परेशान ।
यह दृश्य देखकर, मैं थक गया हूँ ।

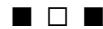
हमारे पहाड, नदियां और जंगलों की हिफाजत नहीं ।
पशु, पक्षी, जानवर और दूसरे जीवों की परवाह नहीं ।
खुद का कचरा दूसरों के घरों में बेपरवाह फेंकना,
और खुद को साफ समझना ये बर्ताव देखकर, मैं थक गया हूँ ।

सदियों से ईश्वर, अल्ला और गॉड की त्रिमूर्ती बनती नहीं ।
स्वर्ग, भिश्त और हैवान, अपनी अपनी रियासत हो बैठी है ।
ये मेरे वतन के लोगों की अज्ञानता महसूस कर, मैं थक गया हूँ ।

फिरभी मैं अहसासका दिवाना, हर दिन शुभ होता है,
मुझे भारतके परिवर्तन का अहसास हो रहा है ।
रात टलके, उषःकाल हो रहा है ।
सूर्य की कोमल किरणों, आँखमिचोली खेल रही है,
और नया दिन, कमलफूलकी तरह खिल रहा है ।

My optimism about India (भारत) stems from its unique brand of humanity that I have sensed over a period of my 81 years. It stems not from the GDP, GNP and exchange rates broadcasted regularly by the economists. Instead, it stems from the undefinable vibrations soaked from its environment, which include :

- The wisdom radiating out of the silence of Ellora Caves, especially at dusk time.
- The grace and contentment of life radiating out of the tribals in Bastar during 1943-45.
- The wisdom radiating out of the simple village folks that have never attended any school or veered very little out of their natural environment.
- The demeanor of a young rickshaw driver patiently maneuvering his vehicle through the mass and mess of modern traffic in Pune while earning a living on a daily basis.
- The hope and enthusiasm radiating out of a 12-year old boy along the roadside trying to earn a living by polishing shoes in the hustle and bustle of Mumbai's maddening traffic.
- The weaver patiently handling multi-color yarns on a handloom to produce a carpet or saree that is an exquisite piece of art, while earning a meager daily wage.



Generation Gasp : Our India Today

Generation Gasp is a tale of paradoxes. The rate of change in a social structure seems to depend on the available speed of travel, which in turn is determined by technological innovations as well as discretion in optimally utilising available knowledge and resources.

A commodity that is visibly plentiful in India has always been “People”. Our English text book in ninth grade (1945-1946) authored by Mino Masani was titled “Our India”. A simple sketch at the beginning in the book illustrated world population lined up statistically to point out that every fifth person standing in the lineup was an Indian. Since then the population has mushroomed in India’s fertile fields of unrestricted passion for life. Feeding an ever growing family of 1.3 Billion people for decade is no small task viewed from any dimension. The sheer number of ever growing mouths to feed reflects in a recent United Nations survey reported in a November 2013 issue of the Times of India that states “25% of world’s poor live in India”. That is one in every four.

The commodities virtually in short supply in India during November 2013 are Onions, Tomatoes and Potatoes. In a free market economy bustling with consumers, virtual shortages of essential commodities seem to be manipulated to hike prices as high as the customer's pockets can bear. Shortage of items such as Onions essential in daily Indian cuisine extract tears and cause hardship for the common folks. Naturally, it becomes a hot issue for political parties eyeing for power in the forthcoming In-

dian national elections scheduled for 2014. The Onion, Potato and Tomato issues seem to divert the voter's attention temporarily away from the real national problems such as corruption that is flowing rampantly throughout the nation's blood veins and arteries. Not even one citizen admits to being corrupt, and yet the entire bureaucratic machinery seems to be corroded and in constant need of lubrication.

Amusingly, I have personally transitioned through the price of an egg from 1 old-Paisa /each during 1943-45 in Dantewada, Bastar State to Rs. 5.33 /each, which is the price in Pune, Maharashtra in November 2013. You don't have to guess my age. I am deliciously ripe 82.

Youngsters of today in the age range of 5-13 living in large cities present an interesting dimension. Parents of some of these children may not be high school graduates, but the children are merrily finger tap- dancing on desktop keyboards and iPads as if they have been playing with these toys ever since they were in their mother's womb.

Simultaneously, there are educated parents with college degrees who are fully employed and can manage to buy a computer; but refuse to buy it for their kids. They seem convinced that the computer will spoil the kids, their studies and school grades will suffer, and the kids will not get good jobs. In the mean time, the youngsters steal their way to a nearby computer joint called Cyber Cafe to download games, surf the Net, and inadvertently learn to play hide-n-seek games with their parents. The Cyber Cafe charges Rs. 15-20 per hour for use of computers provid-

ing full access to Internet. The price of an average icecream cup the kids would buy is also Rs. 15-20. The parents ask the kids, where were you all this time and the poker-faced kids say “talking to friends”. The kids do not lie!!

A 2011-2012 Indian market survey reported that Computers are still a luxury — 20 percent households in urban areas and 5 percent in rural areas own one. Of the 9 percent households that own computers, 6 percent have no Internet connection.

Recently we met two different engineering professionals who have taught in universities throughout their lives and are currently in the age range of 50-65. Both of them are computer illiterates and refuse to have anything to do with those “things”. In the same age range, some couples are college graduates, and both share the same eMail ID. In these cases, you can be sure that one of the spouse does not even touch a computer. The eMail addressed to them is read aloud by the computer-literate spouse to the other spouse . Their responding eMails are co-signed by both of them in electronic print. They generally say “we don’t really do computers or eMails”. Nor do they operate mobile phones while a menial laborer appears to be using mobile phone casually. A 2012 census shows that atleast 50% Indian households own a mobile phone. It is amusing to witness what a shrinking Generation Gap and Overlap is all about.

Indian Universities seem to be cranking out technical and computer professionals faster than the rate of jobs creation in the country. As a result, the export of

computer literate personnel and services has increased many folds over the past few decades. Opportunities in the global computer marketplace has generated a few Indian millionaires and some billionaires in a relatively short span of decades by expanding and exporting their services worldwide. Some Indian companies offering computerized accounting services are helping file U.S. Tax Returns for American businesses and individuals. Audio tapes of American doctor's diagnostic assessments are routinely transcribed and e-mailed back overnight to USA. India may have the highest number of English speaking people with widest range of accents.

In the meantime, the Indian politicians are scratching their heads to bridge the ever widening and deepening gap between the haves and have-nots, trying to manage two parallel economies, one run with the "white-money" and the other one propelled by the unaccounted "black money". Mind boggling financial Scams abound, while the common folks are hoping-against-hope for improved environment . Wedged precariously between international power blocks, the nation's economy is teetering-tottering,

Mr. Mukesh Ambani, born with a golden spoon in his mouth, is son of a self-made entrepreneurial father Mr. Dhirubhai Ambani. Mukesh has successfully advanced his father's enterprise named Reliance Industries to become India's wealthiest entrepreneur and lives in a multi Billion \$ mansion overlooking Mumbai slums of Dharavi . The paradox is that Mumbai, the financial capital of India, houses one of the largest slums that seems to be ever growing. The millionaires and billionaires seem to live at varying levels

of social conscious awareness as do ordinary folks.

On 5th November, 2013, the Indian Space Research Organization of India (ISRO) successfully launched the Mars Orbiter Mission, which is anticipated to be a one-year journey. The launch of the spacecraft named Mangalayan from Satish Dhawan Launch Pad was technically as smooth as any that was previously witnessed anywhere. The mission has reportedly entailed a fraction of the cost incurred by US, Russia, and EEC for a similar mission. Bullock carts still travel at 2 miles/hour in small villages carrying paddy and sugar cane loads entailing short distances in rural India.

In India, a democratic country that guarantees full religious freedom, the business of religion is thriving as ever before. God is marketed by various religions without discernable product differentiation except the Brand names. Religion is the only unique and profitable business that does not have to produce an end product in order to promote its related services. The promise of the ultimate product identity God/Heaven and delivery is held strictly confidential. Yet faithful customers abound. Several ancillary industries spring around the core business of religion. The profit margins are high and competition is always intense. Since 80% of India's population seems to reside in rural areas, the business of religion is pursued much more vigorously in the hinterland and thrives on the fertile grounds of ignorance and poverty.

Flocks of faithful congregate in their respective places of worship seeking unending blessings, personal favors and freedom from fear. Some even congregate on public streets under the open sky above; flouting any sense of

civility. Religiosity seems to be a public expression of faith ensuring regular attendance of the faithful to the places of worship. I have coined the word Religiosity to describe the hypocrisy inherent in every organised religion of the world.

A human is born naked without a religion and naturally dies without a religion, but carries the baggage of Religiosity during the entire lifespan. The business of religion is fully aware that only a repeat-customer is a real customer that ensures the health of any business.

Recently Dr. Dabholkar, a qualified Physician and a Hindu by faith, was murdered in cold blood in Pune, India. Reportedly, he entertained an active role in educating rural folks to avoid blind faith from personal beliefs including magic, miracles, and a host of prevailing myths.

The prevailing subdued consensus in Pune seems to be that Dr. Dabholkar had inadvertently stepped on several business interests of religion and may have been eliminated by religious guardians (धर्म के ठेकेदार). Each profitable and fiercely competitive business anywhere seems to be protected at any cost. Hitting a 65 year old unarmed and unassuming Dr. Dabholkar was an easy soft target. For a similar reason, I had felt that President John F. Kennedy was taken out with a more sophisticated plan. Assassinations of M. K. Gandhi and M. L. King bear the same footprints. It seems like an age old practice of expressing anger. a mindless war of the believers and the non-believers, them and us, that fails to find a common ground to co-exist. Humanity bears the emotional burden

of these self-incriminating acts of violence through centuries. The self-revealing sacrifices of individuals for a rightful cause etch a permanent scar in the consciousness of humanity that is constantly in search of its true self-identity.

At an individual level, faith is entirely an individual's inner experience, whereas religious organization is invariably a profit-driven business enterprise. Amusingly, profiteering in the name of Prophet are common practices evident worldwide even in the 21st Century.

In the meantime as a new day begins, the streets of India are crowded with people, motorbikes, small-medium-large size cars, auto-rickshaws, hand-pulled carts, cows and stray dogs. Each one of them seems to enjoy the Bill of Rights to live and let live. We have a friendly rickshaw driver named Raju in Pune, who has taken us around town on several occasions. One day while riding in his rickshaw, we expressed to Raju our awe at his skill and patience in maneuvering the rickshaw through the mind-boggling traffic every day. We also expressed how close he comes every moment to being hit or banging on another vehicle during his entire 8-10 hour working day. Thirty-year-old Raju replied with a cool tone "We take care of each other". In that brief response we sensed Raju stating lot more than he said. We sensed Raju stating "We exercise our right to live and let others live, and that includes humans as well as other living beings". The daily traffic on the city roads in India reflects the dynamics and paradox of humanity in action and transition on a daily basis. Where else could you find such a great diversity and dynamics of life in action?

It is helpful to look at daily life from an Eagle's perspective flying high in the sky! NASA's satellite camera views the Indian subcontinent without any boundaries as shown in the picture on the back cover of this book.

India, the nation as a whole is gasping with a unique optimism for moving forward in the 21st Century after the 2014 national elections and hoping to grow from the ground up just like a Banyan tree does.

India/ भारत, at its root level has always been a land of Seekers that have explored the immense possibilities of life; possibilities even far beyond the mundane and illusory realms of daily life including the mirage and meaning of material God, Heaven and Hell.

The Seekers of this land have sought the inalienable universal truths that exist eternally revealing humanity's universal identity.....through dynamic introspective processes. Introspection is not about inaction; instead it is an active engagement with conscious awareness of life.. simply suggesting that each human is innately attuned to be the creator of its own creation. In the evolution of human consciousness, ultimately all dualities of life cease to exist.

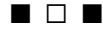


अंदाज और अेहसास

अंदाज मेरा अफसाना*। मैं अेहसास का दिवाना
माँ साथमें हो ना हो, फिरभी हमेशा उसकी दुवा का अेहसास होता है।
माँ की ममता, सद्गुरू रूप दर्शन।
पैरोंतले वतन हो ना हो, उसके संस्कृती का अेहसास हर पल होता है।
वतन की मिट्टी, जन्मजननी और मातृभूमी एकही भाव के अेहसास है।
ईश्वरतत्त्व दिखता नहीं, परंतु हर पल उसका अेहसास होता रहता है।

हमारे दिलकी धडकनें और सांस, अपनेआप खुद के रफ्तार से चलती है।
ए मेरी सांस, थोडी धिमी धिमी चाल से चल,
ताकि मेरा मन डगमगा ना जाए।
और मैं मेरे ईश्वर का अेहसास आजमा ना सकूँ।
ईश्वर, अल्ला और गॉड, यह एकही सोच और रियासतके अेहसास,
अंदाज नहीं।

आज आधुनिक भारत के अकलमंद परिवर्तन का अेहसास हो रहा है।
भारत, हमारे वतनकी सांस्कृतिक सोच है; अंदाज नहीं।



* अफसाना = कहानी, फसाना, आफवाह, कथा कृति, किस्सा, दास्तान,
रवायत, आख्यायिका।

* अेहसास = आजमाना, अनुभूति, साक्षात्कार।

मानवता की सुवर्ण सोच

भारत शब्द का मूल्य अर्थ है 'भासि रत' अथवा ज्ञान का आधार (बुनियाद)। जिसके बिना हम खुदके और साथ ही साथ दुसरे जीवों की भावनाओं को आजमा नहीं पाते। उलटे खामोखाँ आपस में संघर्ष करने खडे हो जाते हैं। आत्मज्ञान के आधारित रहने की जीवन शैली का नाम है हिन्दू; और उसके वर्तन का नाम है हिन्दुस्थान। हिन्दुस्थान केवल हमारी भौगोलिक पहचान है।

साम्प्रदायिक भाव में, धर्म शब्द का मनमाने अनर्थ हो बैठा है। पुरातन काल से मानवता की आध्यात्मिक सोच को सर्वप्रथम गीत रूप में समाई गई हैं। रामायण, श्रीमद्भगवद्गीता और ज्ञानेश्वरी ये कुछ उदाहरण है जो दूर दृष्टी से लिखे अमूल्य आध्यात्मिक गीत हैं। रामायण ऋषि वाल्मिकी ने लिखा, श्रीमद्भगवद्गीता ऋषि वेद व्यास ने लिखी, और ज्ञानेश्वरी संत ज्ञानेश्वर ने उम्रके इक्कीसवे साल मे ही पुरी लिखकर समाधी ले ली। ये सब असामान्य लेखक; दूर और अंतरयामी दृष्टी के इन्सान और कवि हुए। ईश्वर, अल्ला, या गॉड ये सिर्फ तत्त्वरूप हैं और ग्रन्थ या आध्यात्मिक गीत लिखते नहीं।

छुटपन में साम्प्रदायिक भाव से पढकर, इन गीतों का एक मतलब महसूस होता है और बाद में अकलमंदी से ग्रहण करने के बाद, उन में समायी गहरी सोच की अनुभूती होती है। साम्प्रदायिक और वैयक्तिक आत्मबोध के बीच यही फर्क होता है। रामायण और गीता ये दोनो गीत मानवता के मन में सदा चलते हुए सत्य असत्य, अथवा सदाचार और दुराचार के बीच के संघर्ष का अज्ञान और समझौते के गीत हैं, जो सदा के लिए परम सत्य की पहचान देने में समर्थ हैं। दुनिया के सभी धर्मग्रंथों का यही असली इतिहास है।

हरेक इन्सान का धर्म खुद के पसंद की जीवनशैली जीना होता है। खुद की जीवनशैली जबरदस्ती से दूसरोंपर ढोना याने झगडा मोल लेना होता है। माता-पिता खुदके बच्चोंपर जबरदस्ती नहीं कर पाते। बच्चे, उनके माँ और पिता की जीवनशैली से (आचार, विचार और सद्भाव) जीवन का ज्ञान आजमाते हैं, उनके पुस्तकग्यान या जबरदस्ती से नहीं। यही बिमारी देशभर और दुनियाभर फैली हुई महसूस होती है। आत्मज्ञान और धर्म को सामाजिक अथवा साम्प्रदायिक रूप देना, यही मानवता की बडी भूल महसूस होती है।

संस्कृत में एक कहावत है 'स्वधर्म निधतम श्रेय, परधर्मो भयावह।' 'The Remain Yourself seems to be the key to individual self enlightenment. ऐसी सभ्यता के खिलाफ, साम्प्रदायिक धर्मांतर अथवा धर्म परिवर्तन करने का रियाज,. वैयक्तिक और सामाजिक अज्ञान का प्रदर्शन होता है।

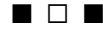
धर्म की ठेकेदारी करने का हक भारत के या किसी भी परदेशी सम्प्रदायका हक नहीं बन सकता। खुद के वतन के लोगों की तन, मन और आत्मग्यान योग से सेवा करना यही हरेक नागरिक का असली धर्म होता है। जिस की दूसरी पहचान है, इंसानियत सब जीवों को एक ही नजरिया से आजमाना।

युग बडा काल होता है, और चार अलग युगों का जिक्र हिन्दू सोच में किया गया है। इन युगों की भूलभूलैया में 'भारत' मानवता की गहरी और सुवर्ण सोच रही है। इस युग के चक्कर में, मेरी केवल ८२ साल की, स्वतंत्र सोच की आयु पर आधारित मुझे अहसास हो रहा है कि, नरेन्द्र मोदी, भारत की मिट्टी से पैदा और पला हुआ पवनपुत्र है वह परदेशी सोच, राज्य या रियासत का शहजादा नहीं ना कि किसी का चमचा, खुशामदी या चौकीदार ! पंतप्रधान मोदी, समतोल बुद्धीभाव से दिल्ली दरबार को संभालकर, जनता जनार्दन सेवक महसूस होता है। इस जिम्मेदारी को सफलता से निभाने के

लिए, जनता के सभी हार्थों का योगदान आवश्यक है ।
श्रद्धा भक्ति बढाओ, सन्नतकी सेवा
वैसे ही जनता जनार्दन भाव से लोगों की सेवा ।
सिर्फ अंधश्रद्धालू आलू या कद्दू ना बनो ।



ऊपर दिये विचार धारणा पर आधारित अगला निबंध, विचारों की सुभिता
से, इंग्लिश में लिखा गया है जिसकी टाइटल है 'God Damn Religion.'



God Damn Religion

It is not about my religion or yours. It is about all religions scripted by mankind under the pretext of God and its authority using a tone that “My God is superior to Your God “ or expressed in Hind ‘उंचेसे उंचा मेरा भगवान.’

In the Sanskrit language, the word Bharat represents the foundation of the inner experience without which humans cannot understand themselves as well as the emotions and faiths of other living beings and our total integration with the environment and the Cosmos at large. The way of life incorporating this philosophy of life is identified as Hindu and the land where it is prompted or practiced is named Hindustan; which is only a geographical identity.

Humanity’s ignorance of itself is clearly audible through its centuries of inhumane behavior towards itself through the medium of religion.

The word God, ईश्वर या अल्ला is symbolic of an indivisible universal principle that exists eternally on its own. The word “eternally” simply implies “that which was never created, it exists now equally in every element of its creation, and will never cease to exist “. Hence God is not a person that sits and scribbles religion, rituals, rules and regulations, or passes judgement on any one for any reason, at any time.

In another perspective, God does not become a human (अवतार) and descend or incarnate itself on planet Earth.

Instead, a human consciously rises from devilish tendencies (such as anger, jealousy etc) to a self enlightened divine level. In the process, a human does not become God but consciously becomes an integral part of the Cosmos and its universal wisdom.

God principle is the medium that births every life form, sustains it, and ultimately transforms it in a cyclic pattern of its own design. God, a universal principle, does not have attributes of its creation and yet it pervades and empowers equally every element of its creation. Every element of creation has the God principle embodied in full measure; just as a drop of ocean has all the attributes of the ocean.

Since God is an invisible source of all that we survey, the fickle human mind vainly creates it in its own image. Ever wondered, why God is only portrayed mainly as a male figure! The Heaven, Hell, Devine and Devil are creations of the illusory human mind playing games with itself.

The religious believers and the non believers are both fearful of what they don't know. Fear of the unknown is the only commonality between them. A tinge of doubt lingers on in their minds suggesting, could I be wrong in my presumption? Only when the ignorance and the tinge of doubt become excruciatingly painful, and they admit to the possibility " I don't know"; only then each one of them becomes a true seeker of the universal truth or eternal knowledge, which gradually transforms them leading to the peaceful bliss that they desire and deserve. Then they become self enlightened beings.

Each religious so-called Scripture, is a philosophical treatise which has been written in the language of the land of its origin. Over the centuries, the languages become modified and the core message of the original treatise is interpreted or misinterpreted by humans themselves. However, the fundamental fact remains that each philosophical treatise was originally initiated with one primal objective. That objective is to address the battle constantly waging in the individual human mind about the Devil and the Divine within and ways to resolve the internal conflict and attain the bliss that each human desires and deserves.

Religion is essential as a systematic self discipline, not to prove the presence or absence of God, but simply to channel the human energy to progressively comprehend duality and experience life as an integral part of the the Cosmos.

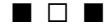
The only difference between the Creator and its Creation (the duality) is an individual's ignorance of itself and its very innate universal Nature. The universal wisdom of non duality stems out of the still waters of a lake in the form of a beautiful and fragrant Lotus flower.



Cauldron of Humanity

Sometimes the world around us seems like a cauldron of humanity's disenchantment with itself. The consciousness of humanity is our own perception and projection from within. Only when our vision becomes all inclusive, the light of wisdom within us lights up and peace reigns.

Prime Minister Narendra Modi points out that Terrorism is a war between Humanity and Inhumanity.



वैश्विक सोच : Universal Thoughts

गहरी और निर्मल वैश्विक सोच सदा एकही बनी रहती है जिसे संस्कृत भाषा में लिखा गया है :

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

Meaning:

1. Om, That is Full, This also is Full, From Fullness comes that Fullness,

2. Taking Fullness from Fullness, Fullness Indeed Remains.

3. Om Peace, Peace, Peace.

Note : any translation from Sanskrit to English and vice versa is inadequate or incapable of communicating the essence of the original thought and its flavor.

तमिल और संस्कृत भारत की सबसे पुरातन भाषाएँ हैं। आधुनिक काल में संस्कृत बोली नहीं जाती; परंतु उसके इत्रा की (extracted essence) खुशबू (aroma, flavor, and wisdom) भारत के हर एक बोली में उतरी हुई है। यह भारतीय संस्कृति की अखंड (seamless) ग्यान परंपरा है।

ऊपर संस्कृत में लिखी हुई गहरी, वैश्विक और निर्मल सोचही वतन, संस्कृति और सभ्यता का अवतार है 'भारत'।

भारत संस्कृति के गहरी सोच में, हर एक जीव के (इन्सान, पशु, पक्षी और जल में रहनेवाले) शरीर के बीच एक सूक्ष्म बिंदू है, जिसे संस्कृत में

‘हृदय’ कहा गया है। It is not the Heart muscle that throbs automatically. इस हृदय अथवा जीवन चेतना के माध्यम से पृथ्वीपर, उसके अंदर और जल में सारे जीव (including micro organisms) पैदा होते हैं, जीते हैं और अंत में उनका परिवर्तन होकर वे सृष्टी में पूरी तरह से समा जाते हैं। उसी जीवन शक्ति की चेतना जमीन में भी मौजूद है जिसके कारण हमें जमीन से फसल मिलती आ रही है और आती रहेगी। आज के fancy शब्दों में उसे Organic Farming कहा जाता है ! यह सब पंचमहाभूतों का (आकाश, वायू, पृथ्वी, अग्नि और जल) खेल और मायाजाल है।

यही गहरी वैश्विक सोच अमेरिका के आदिवासी (Native Americans that have been woefully identified as American Indians) लोगों में भी प्रचलित है। According to their belief systems, the entire Universe represents a constant Energy, implying that any energy withdrawn from it is instantly replenished. Death and birth of living species is an integral part of that eternal process. In absence of a written language, various tribes of the Native Americans (Navajo, Mayan, Cherokee,...) have encapsulated their belief systems in sounds and symbols of chanting. Chanting is a vibration that bridges the dimensionless Creator and its Creation.

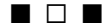
आज धर्म शब्द जिस भावार्थ और नाम से पहचाना जाता है वह हर इन्सान की अपनी अपनी पहचान होती है।

शास्त्रीय विज्ञान के सहारे इन्सान पंचमहाभूतों से बाहरी विश्व की खोज करता है। Logic, reason and material proof are its tools of investigation.

अंतर्यामी योगसाधना मार्ग से इन्सान खुद की वैश्विक (universal) पहचान आझमाना अथवा अनुभव करता है। Introspection gradually transcends beyond the faculties of the mind and intellect to experience self-revelation (आत्मबोध) which is an experience beyond any word of expression. This is the profound and consistent prompt of the self-enlightened Masters of भारत, जिन्हे हम सभ्यता और आदरभावसे ऋषि, मुनी, संत, बुद्ध, सूफी ऐसे शब्दों से संबोधित करते हैं।

हर एक इन्सान का बदन (शरीर) उसके खुद के माने हुए भगवान का मंदिर / चर्च / मस्जिद / दर्गा होता है। इसिलिए अपने शरीर और मन की सोच को सदा निर्मल और साफ रखना हमारा फर्ज होता है। खुद की सोच में ही खुदा, ईश्वर, अल्ला, गॉड पूरी तरह से समाया है, उसे ढूंढने या आझमाने तिर्थस्थान, मक्का-मदिना या जेरूसलेम नहीं जाना पडता।

हमारे मन के अंदर और बाहर के झगडे, सदा हमारे हृदय में ही शांत होते हैं।



Intuitive Wisdom of Children

Fourteen year old, Deepak Aibhan Oli and his younger brother ten year old Pushkar, born in Pune, Maharashtra, comfortably communicate in Marathi, Hindi, English and their mother tongue Nepali. Indian children seem to intuitively pick up languages from their nurturing environment to embrace the wisdom encapsulated in each language. हर एक भाषा का अपना अपना भाव होता है। और दो भाषाओं के जुगलबंदी का सूर कुछ और ही होता है ! हिमालय से रामेश्वर तक और बंगाल से द्वारका तक अलग अलग भाषाओं के भाव और सूर के रंग दिखाई देते हैं, यह भारत की अमूल्य अमानत महसूस होती है।

With fourteen recognised regional languages and unaccounted intermixed languages along the borders of each state, the diversity of languages is a hidden asset of the Indian subcontinent in ways undefinable and immeasurable.

However, from an administrative and governance standpoint, it is a centuries old nightmare to say the least. Probably no other pocket of humanity on planet Earth has the diverse mixture and concentration of cultures, languages, religious ways of experiencing life that represents a unique mass, mess, as well as wisdom called India that is भारत.



भारत का सूक्ष्म इतिहास

अनगिनत सदियों के पहले, भारत ये ऋषि, मुनी, संत और आत्मज्ञानी महात्माओं का वतन रहा है। जिन्होंने बाहर का विश्व और खुद के अंदर बसा विश्व इन दोनों को एक ही रूप में आझमाने की चेष्टा की गई है। उसके बाद भारत में अनेक राजा और महाराजाओं का राज रहा है, जिस में राजा जनक, अयोध्या के राम, अशोक राजऋषी हो गए। कोई शहजादे महावीर और बुद्ध बन गए। उन्होंने आम जनता को आत्मज्ञान का मार्ग दिखाया, उनके बाद, धर्म के नामपर जनता अंधश्रद्धा में डूबी महसूस होती है।

पिछले कुछ सदियों से, विदेशी आक्रमणकारी राज्यों का दिल्ली से राज रहा है। भारतीय जनता ने स्वाभिमान खोकर, सलाम करने की गुलामी अपना ली और खुद की अमूल्य संस्कृति पर धूल चढा बैठे है। इस जहरीली धूल का उन्हें अहसास भी नहीं होता। फिर भी उनमें से जागे हुए अनगिनत वीरों ने, भारत की स्वतंत्रता का बोझ उठाया, स्वतंत्रता की जंग में, अनगिनत वीर, स्त्री और पुरुष शहीद हो गए। ए मेरे तन, मन और वतन के लोगों, जरा याद करो उनकी कुर्बानी की।

१५ अगस्त १९४७ से, देश की स्वतंत्रता पानेके बाद, भारतीय राजनेताओं का राज रहा है। गए कुछ ५० साल से, सारे राज्य में पैसे खाना, खिलाना और देश को लूटने का माहोल बन गया है। खुद की सेवा और देश को लूटना उनका मूलधर्म हो बैठा। देश के स्वाभिमान को दीमक लगी महसूस होती है। अंग्रेजों की हुकूमत में भी देश लूट गया था परन्तु लुटेरे परदेसी थे।

आज २०१४ से दिल्ली के आसनपर, केवल भारत के संस्कृति की खडाऊं (पादुका) रखी है। और जनता जनार्दन की सेवा में नए प्रधानमंत्री नरेन्द्र

मोदी, जनता को हर पल साथ लेकर देश की सेवा करने का प्रयास कर रहे हैं। इसी कारण देश के परिवर्तन होने का अहसास हो रहा है। नरेन्द्र मोदी का नारा 'श्रमेव जयते' जनता के दिलों में गुँज रहा है ।

भारत के ऋषि-मुनियों की अमूल्य आत्मज्ञान और आत्मबोध परंपरा खोई नहीं है और ना कभी खोई जा सकती है, क्योंकि परमसत्य कभी बदलता नहीं। परमसत्य का कोई नाम नहीं और उसे पाने के लिए परदेश नहीं जाना पडता। सम्पूर्ण जीवनज्ञान शैली को, संस्कृत और भारत की सभी भाषाओं में सूक्ष्म रूप से जिक्र किया है । उसे आझमाने के लिए हमारी तीसरी आँख खोलनी होगी। प्रकृती ने शिवशक्ती की तीसरी आँख हर एक इन्सान को प्रदान की हुई है, जिसे हमें योग साधना से खोलनी पडती है। इस तीसरी आँख से हम खुद को, मानवता को और सृष्टी को निर्मल और साफ नजरिया से देख पाते हैं। हर एक धर्म के सोच में, अपनी अपनी खयालों में अनुभूती का कुछ चुने हुए शब्दोंमें जिक्र किया गया है; उदा. आझमाना, साक्षात्कार, आत्मबोध, अन्तर्यामी अनुभव, Self realisation, Self revelation and revelation beyond any word.

भारत और हिन्दू ये दो सम्प्रदाय नहीं, केवल एक ही गहरी सोच की अनुभूति जिसे ॐ, एकोंकार और 'हूँ, हूँ, हूँ...' के ध्वनी तरंगों में पूरी तरह से समाया गया है।

भारत के आध्यात्मिक इतिहास में वैश्विक तत्त्वों का जिक्र किया है। ये ढिंढोरा पीटने के नारे नहीं हैं। भारत की आध्यात्मिक सोच में कुछ चुने हुए शब्दों का निचे अर्थ दिया है :

मानव - अज्ञानी जीव जो बारम्बार वही गलतियाँ करने के चक्कर में फसा रहता है और उससे बाहर निकलने का प्रयास करता रहता है।

मिट्टी और शरीर - ये दोनों जड तत्त्व हैं। जिनका सदा परिवर्तन होता रहता है।

ब्रह्म - एकमेव वैश्विक मूल तत्त्व, जो निरंतर है याने कभी बदलता नहीं और जिसे काल मर्यादा नहीं, जिसकी कभी निर्मिती या अंत नहीं। (The eternal and unchanging Truth / Consciousness / Cosmos that is all pervading)

ब्राह्मण - निष्ठा से आत्मज्ञान को श्रवण अथवा आत्मसात करनेवाला। ब्रह्मतत्त्व की अनुभूति चाहनेवाला।

अवतार - मानव, जो खुद के जीवनशैली के द्वारा तीनो मूल विश्वतत्त्वों का अहसास दिलानेवाला दिग्दर्शक। उदा. महावीर, राम, कृष्ण, बुद्ध, येशू, मोझेस इ. अवतार रूप।

मूल विश्वतत्त्व - एकमेव सत्य ज्याची दिग्दर्शक रूपे ब्रह्मा, विष्णु, महेश (निर्मिती, परिरक्षण, परिवर्तन). त्रिवेणी संगम अथवा त्रिमूर्ति (Trinity).

ईश्वर और इन्सान एक मधुर जुगलबंदी का संगीत और ताण्डव नृत्य है। स्वर्ग और नर्क बाहरी जगत नहीं, केवल मानवता की मनःस्थिती है। बाहर का विश्व और हमारे अंदर बसा हुआ विश्व एक समान है। खुद और खुदा की मंझिल एकही है दो नहीं।

The Kingdom of God is within you.

ॐ तत्सत् ।



Randevu and Tryst with Destiny : भारत भाग्यविधाता

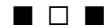
How lucky can a politician get !

Politics seems to be a pond of filth, silt and long intertwined roots of creepers in which politicians pitch mud at each other and no one bothers to clean up the mess. But a land-locked lake is an ideal environment in which Lotus flower blooms greeting the sunrise.

By pitching Rahul Gandhi against Narendra Modi, Congress helped Modi get elected.

Persistent criticism by vested interests, press and opposition helped the Modi Brand register in voter's minds and minimise the BJP's advertising budget for the national election campaign of 2014 and help Modi's cause for cost reduction at every step.

Now as the Prime Minister, any praise from common folks about Modi's efforts to pump oxygenated blood through the veins and arteries of the nation, serves as daily vitamin pill for Modi to carry on his daily workload of 15 ½ hours. The fringe benefits of the job are the blessings and warm smiles received from dedicated workers nationwide working for the common cause.



Cleanliness : साफसफाई

Prime Minister Modi's persistent insistence and priority of his Government for providing accessible clean drinking water and toilets to India's common man has subtle embedded messages:

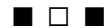
- Clean up the Government bureaucracy and social fabric that is infested with white ants (दीमक).
- जहाँ जहाँ दीमक लगी है उसे हटाकर नया साफ घासला और हौसला बनाएँ।
- Facilitate easy access for the common man to participate actively and honestly in nation building efforts.
- Clean up the role of politicians from ruling the people to serving the people.
- Clean up the outdated social norms with full participation of the common man. The massive project of cleaning up the polluted Ganges river and its tributaries is a part of it.
- भारत खुद की ही सोच और अंदाज में खुद की तरक्की आझमाएँ और साथही साथ दुनिया का भला चाहें।
- दिल की और काम की सफाई सब से श्रेष्ठ होती है।

India represents a uniquely complex pocket of humanity with its 1.25 billion population having diverse linguistic, cultural and religious followings and a wide assortment of talents. At one end, its scientific community has recently launched an indigenously produced spacecraft that was launched and was successfully locked in a planned orbit around the planet Mars in its very first

mission; incurring an abnormally low cost for the entire space mission. At the other end of the society is a large pocket of rural India languishing in basic sanitation, education, and poverty of opportunities to participate in the 21st Century India. Leading and addressing a country of this complexity requires a unique brand of leadership. Prime Minister Modi seems to grasp an Eagle's overall perspective of the country which was evident from his speeches at his Swearing in Ceremony on 26 May, 2014 and India's Independence day celebration on 15 August 2014. He relentlessly maintains a positive tone for promoting active participation of every citizen in the national agenda.

Addressing the Nation in simple language audible to the masses, he addresses Gross Domestic Problems (GDP) suggesting practical approach to the solutions in reasonable periods of time. The Nation seems to be appreciative and responding to the spirit of transparently honest simplicity and dedication to commitment.

Based on his progressive governance of Gujarat as Chief Minister and now as the Prime Minister of India, Narendra Modi appears to be a facilitator of desirable change. His spirit of teamwork and self discipline exudes enthusiasm for the active participation of citizens at an individual level.



Progressive Revelations

In an early morning dream today, 12th Nov. 2014, I was intently scanning a map of Bhutan and the surrounding countries on its northern side beyond the Himalayan mountain ranges . For some reason, my attention was focussed on Bhutan, which is a small kingdom tucked in the beautiful Himalayan mountain ranges on the North-East side of India.

In 2008, our son Deepak had accompanied his cousin Ajit Harisinghani, along with Ajit's wife Meena and daughter Juhi to visit the kingdom of Bhutan. Ajit had travelled the entire distance from Pune to Bhutan on his Royal Enfield motorbike, whereas Deepak, Meena and Juhi travelled by train and road. At that time, Bhutan was ruled by a king who was popularly respected. He had descended to the throne through centuries of traditional dynastic rule. Deepak had liked the unassuming simplicity of the people of Bhutan and how dearly they loved and adored their King. However, considering the dynamics of changing times, the popular king had initiated steps to democratise his kingdom and transfer power to a democratically elected Government; surprising his own people.

A couple of years later, general elections were held and a democratically elected new government was sworn in with a Prime Minister to administer the kingdom. A remarkable peaceful transition from age old monarchy to democratic self governance. The Prime Minister is presently serving his second term in office.

India's newly elected Prime Minister Modi recently paid an official visit to Bhutan during which he became aware that Bhutan has already achieved the distinction of being the world's first country to go wholly organic in production and consumption of food. Crops are grown with only natural fertilisers, cattle is not fed any hormones to produce extra milk, foods produced and packaged with artificial preservatives are discouraged, and steps are taken to meticulously keep the environment pollution free. Complementing Bhutan, Mr. Modi mentioned this fact in his own inauguration speech to his nation.

In mid November 2014, we heard the Prime Minister of Bhutan, Mr. Tshering Tobgay, being interviewed by a Western journalist on YouTube. In the interview, the Prime Minister comes across transparently as an excellent statesman with his wide ranging views on politics of governance, pollution, humanity's needs and aspirations. All this wisdom emanating from a tiny nation tucked in the remote folds of the Himalayan mountain ranges prompts that wisdom of life is harvested from the very environment of ones own natural habitat and heritage.

Maybe, that was the message seeping out of my morning dream!



ए मेरे तन, मन और वतन के लोगों

अनगिनत सदियों से भारत एक गहरी सोच है।

वक्त के मुताबिक वतन का इतिहास बदलता रहता है।

हिन्दु, जैन, बुद्ध, इसाई, सिख, बहाई ये सब एक ही सोच के अलग-अलग रंग और भाव हैं, जिन्हें अलग-अलग धर्मों के नाम से बाँटा गया है। इन्द्रधनुष्य एक ही सूरज के किरणों के सात रंग दिखाई देते हैं। हर एक रंग का अपना-अपना भाव होता है। गहरी सोच में वर्ण, जात-पात ऐसे मतभेद के लिए कोई भी जगह नहीं होती।

Faith is an individual specific inner experience; it is not about a mass organization. Faith is not about the ladder we climb or about the distance we travel; instead it seems to be about experiencing the present moment and the universal wisdom that lies within. A faith that stands firmly on its own weight does not require protection or approval from any outside authority. We are not just talking about temples of worship which seem to be citadels of rights and rituals.

An unshakable faith is an unconditional commitment, a self-enlightening experience of genuine freedom.

जैन, हिन्दु, बुद्ध, इसाई, यहूदी, इस्लाम, सिख या बहाई यह अलग-अलग सोच के मुताबिक जीवन जीने के तरिके हैं। हर एक इन्सान की जिंदगी जीने की सोच अलग होती है यह स्वाभाविक है।

जैन धर्मगुरु महावीर ने सोच के दिगंबर अथवा नग्न स्थिति में, जिंदगी के मूल तत्वों का सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप में जिक्र किया। हिंसा की विचारधारा

को पकडकर, अहिंसा को सूक्ष्म रूप में आझमाया । प्रकृती में जो एक जगह से दुसरी जगह जाता नही (जैसे पौधे, वनस्पती इ) उन में चेतना नहीं होती । और जीव में (जैसे कीड़े, मकोड़े, मछली, पशु, पक्षी, मानव) चेतना होती है, इन दोनो में यह एक ही फर्क होता है । चेतनाधारी जीवों को जन्म, मरण, सुख-दुःख का अहसास होता है । इसी कारण, विश्व के कोई भी जीव को किसी भी तरह से दुःख या हानि ना पहुँचाएं । जीव शब्द को गहरी सोच से आझमाकर महावीर ने आदेश दिया 'अहिंसा परमो धर्मः।'

अंधश्रद्धालु जैनियों ने धर्मप्रचार संस्थाएँ स्थापन करने के पीछे महावीर के सिद्धांतों का अपभ्रंश रचाया ।

हिन्दु गहरी सोच में अपने बाहर का विश्व और अन्दर का विश्व एक ही रूप में (Identical) आझमाया है । संत तुकाराम जैसे संतो ने भजन गाया, 'माझा देह, माझ्या देवाचे मंदिर - मेरा देह मेरे भगवान का मंदिर है' अंधश्रद्धालु हिन्दु उसी गहरी सोच का बँटवारा करके, जात-पात-वर्ण भेदों में आपस में ही लड पडते हैं ।

आत्मज्ञानी सिद्धार्थ-बुद्ध की सोच में, खुद के मन में सुलगे हुए कोयले और चिंगारियों को (राग, द्वेष, अहंकार, भेदभाव इ.) बुझाकर निरंतर निर्वाण स्थिती को आझमाया । अंधश्रद्धालु बुद्ध के शिष्यों ने धर्म स्थापना प्रयास में आत्मज्ञान और आत्मबोध को दूर कर दिया ।

येशू ने पहले उन के श्रद्धालु चेलों को आदेश दिया, मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें स्वर्ग में मेरे पिता भगवान से मिला दूँ, वह तुम्हारे सब पापों से तुम्हें छुटकारा दिलाएगा । समझदार चेलों को येशू ने आदेश दिया 'The Kingdom of God is within You' येशू के अंधश्रद्धालु चेलों ने जिस्म उठाया, दूसरों का धर्म परिवर्तन करके, उनको ज्ञान सिखाने का ।

इस्लाम की गहरी सोच में माँ के पैरों तले ही मिश्र (स्वर्ग) है, ये कहावत है। खुद और खुदा के बीच की गहराई सिर्फ आझमाई जाती है। इस गहरी सोच के नशे में सूफी फकीर नाचे और गाएँ, 'हूँ हूँ हूँ' के धुन में। परन्तु अंधश्रद्धालु मुसलमान गाएँ 'अल्ला हूँ, अल्ला हूँ, अल्ला हूँ।'

सिख धर्मगुरु नानक साहब की गहरी सोच में से मानवता को 'एकोंकार' मूलमंत्र का आदेश मिला है। अंधश्रद्धालु सिखों ने, एक को दो बनाकर धर्म स्थापना की।

अंधश्रद्धा और खुद की असली पहचान ये इन्सान की दो अलग सोच होती है। एक अंजान बचपने की और दूसरी समझदारी की। बचपन में उतावला मन झगडे और संघर्ष है और समझदारी में सच्चिदानंद, ईश्वर, मुक्ति, निर्वाण, अल्ला या गॉड तत्त्वकी अनुभूती अथवा साक्षात्कार (revelation) समझदार इन्सान अंधश्रद्धालु नहीं होता।

ईश्वर, अल्ला, या गॉड को कोई भी चिन्ह, आकार (symbolism) या नाम दे दो, फिरभी तत्त्व सत्य (universal truth / principle) एक ही है। उसे आझमाना या अनुभव करना हमारी वैयक्तिक (individual) या जिम्मेदारी होता है।

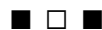
फिरभी सारे भारत में और हमारे मन में ये सब झगडे और संघर्ष क्यों ? अपनी अपनी सोच में इन्सानियत में ही हमारी असली पहचान है। ये हर एक धर्मगुरु, पाद्री या मुल्ला का फरमाया मूल आदेश महसूस होता है।

चाहे हमारी नजरिया में ईश्वर, अल्ला या गॉड हो ना हो। हम सब उसकी नजरो में सदा एक ही है। जैसे एक माँ को उसके बच्चे। ये ज्ञान भारतीय अखंड ज्ञान परम्परा आशीर्वाद है। यही हमारे वतन की, भारत माता की महानता है। उसकी जनता-जनार्दन रूप में सेवा करना हर भारतीय का फर्ज

हो जाता है । यह आदेश प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, उनकी सरकार का और सब देशवासियों का महामंत्र महसूस होता है ।

बचपनमें सीखे छोटे मंत्र आगे बढकर जिंदगी के महामंत्र बन जाते हैं ।
नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमि ।

ए मेरे तन, मन और वतनके लोगों,
श्रद्धा, भक्ति बढाओ
याद करो उन लोगों के श्रमदान और कुर्बानी की
जो हमेशा खुदकी जगहपर, सेवार्थम का पालन करते हैं ।



त्रिवेणी संगम : Trinity of Universality

हर इन्सान की माँ, मातृभूमि और उससे जुड़े अनुभव सूक्ष्म रूप में जीवन का एक महामंत्र बन जाता है। इसी कारण माँ और मातृभूमि निरंतर सेवा के अधिकारी हैं।

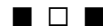
त्रिवेणी संगम ये तीन भाव धाराओं का मंगल संगम । श्रद्धा, भक्ति और निरंतर जनता जनार्दन सेवा प्रयास ।

One simple way to experience Divine principles and their universal manifestation is through selflessly serving the needy. In the process we discover our own Self.

आजमाना, अनुभूती, उमजणे, साक्षात्कार, revelation इन सारे शब्दों का मक्सद, मतलब और अनुभव एकही होता है।

दिलसे किये सेवाभाव को कोई शब्द नहीं । .

Wisdom of life stems from the very environment that births, nourishes, and ultimately transforms us.



ब्रह्मचर्य : Celibacy

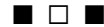
नरेंद्र मोदी, चाळीस वर्षे अटळ ब्रह्मचर्याचे पालन करून चमकणारा मोती. जनता जनार्दनाचा सेवक.

ब्रह्मचर्य एक अंतर्यामी धारणा अथवा संकल्प आहे. ज्याच्या शिस्तीतून जीवनाच्या मूळ तत्त्वाची अनुभूती होते. ज्याला परमसत्य अर्थाने सद्चिदानंद, ॐ, निर्वाण, एकोंकार ह्या ध्वनी तरंगांतून सुचविले जाते.

Celibacy is a self imposed inner discipline, embraced to experience the eternal Truth that was never created and always exists. Those who have experienced it vainly describe it with words such as consciousness of Nirvana, Heaven, eternal bliss etc.

From all that we have heard and sensed, it seems that the Jain philosophy of life originating on the Indian subcontinent is the oldest pioneer of practicing celibacy, non violence, strict vegetarianism and leading an ascetic life (भिक्षुकी) as a joint and coherent discipline to experience the depths of human consciousness and universal truths.

Centuries old Indian traditions of child marriage or arranged marriage may have been a suitable tradition then. However continuing the same tradition blindly without considering the ever changing dynamics of time may be a mistake on the part of social behavior lacking candor. Blind faith and stagnation in social traditions is self destructive.



Handloom Weaver

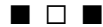
Narendra Modi appears to be the handloom weaver of colorful fabric for India using pure 100% fiber harvested in India.

Nobel Laureate Rabindranath Tagore has rendered an eloquent commentary on the poetry of Kabir in a stand alone book.. Kabir (1441- 1518 AD) grew up in the city of Banara along the river Ganges (गंगा). and pursued his family's traditional handloom weaving profession. While passionately synthesizing and singing his own poetry, Kabir wove beautiful fabrics using colorful threads of Hindu and Islamic philosophies of life.

Once someone asked, " Kabir, do you know who your God is? "

Kabir coolly replied " God knows me. "

The rich fragrance of Kabir's down to earth philosophy and wisdom radiates out of his poetry engaging, challenging enlightening Hindu as well as Islamic scholars. The message of 'हम सबका मालिक एक।' seeps out of his mystic poetry..... 'अमर बेल बिन मूल की, प्रति पालता है तोही.....'



जीवन में कुछ करने का सपना देखो :
Dream to do something

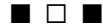
नरेंद्रभाई चुनौती देते कहते, 'सुनो भाईयों, बहेनों और बालकों, जीवनमें कुछ बनने का सपना मत देखो बल्की कुछ करने का सपना देखो और उसे कर दिखाओ।'

नरेंद्र मोदी, भारत वर्ष की उम्मीद और पहचान !



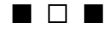
Gross Domestic Problems (GDP)

Modi seems to address the National GDP (Gross Domestic Problems) with wide open ears, firm affirmative action plans, and the clarity of vision of the third eye.



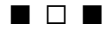
Being your own Self

Prime Minister Modi declares that India wants to grow and continue to be like India in a progressive mood and mode in its own interest .



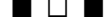
Terrorism

Terrorist and anti-terrorist is a perspective from two opposite ends. Modi states, Terrorism is a war between Humanity and Inhumanity.



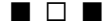
अहमदाबादी मोदी

मोदीभाई होशियारी से बनाए दो के चार और ग्यारा,
पर कभी ना बजने देंगे, देश के बारा।



मोडिफिकेशन

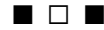
नरेंद्रभाई कहत, मोडिफिकेशन भारतके भलाईके ही लिए
अलग अलग तरीके, सही रास्ता।



कहत नरेंद्रभाई

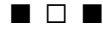
‘मैं ना कभी खाऊंगा और ना किसी को खाने दूँगा।
सारी जनता समझदार है, मैं क्या कहना चाहता हूँ।’

The unfortunate thing is that the toilet seat is the only witness, judge, and jury of Corruption because it bears the full weight of the Ass that makes deposits secretly in every transaction.



हिसाब-किताब

कहत पंतप्रधान नरेंद्र मोदी,
काँग्रेस सरकार ने ६० साल का हिसाब-किताब कभी दिया नहीं,
और मुझसे माँगते है, ३० और १०० दिन का हिसाब-किताब !
भारत की आम जनता जानती है और सदा जानती रहेगी
मेरा पूरा हिसाब-किताब।



Political Trail

Narendra Modi ran the national election campaign of 2013-14 representing the Bharatiya Janata Party (BJP) with a characteristic flavor. Pitched against the formidable Congress party that had ruled India during the majority of years since Independence in 1947, Modi was often addressing an ungauged audience suspicious of any new and empty political promises.

Backed by his 12-year progressive and successful economic reign of Gujarat State as Chief Minister, Modi boldly asked his audience for majority vote nationally for his BJP party. Constantly mentioning his administration's multi-prong approach for economic development and successfully implemented projects in Gujarat, he asked for the opportunity to expand the effort on a national scale. He explained that with clearly defined short term plans for economic growth from ground up, will enable him to unleash people's desire for transparent self governance and charter self destiny. Modi asked the people to share the responsibilities and its rewards, while he offered transparent and fair governance with appeasement of none. He confidently reiterated that his party hopes to secure a majority vote nationwide; hitherto unheard in Indian politics since Independence. The core message seemed to resonate hope.



Sense of History

Modi's sense of history prompts that :

In the past, the invaders and colonizers divided Indians to rule and we let ourselves be divided. Today as an Independent Nation, if we divide ourselves, we will destroy our future.



दो नरेंद्र : Two Narendra

नरेंद्र नाथ दत्ता १८६३ - १९०२(स्वामी विवेकानंद) और नरेंद्र मोदी, यह दो नरेंद्र अखंड भारतीय संस्कृती के दो योग, युग और योगी; एक ही सोच। उस सोच का एक ही सूत्र 'भारत भाग्यविधाता'।

विधाता = Protector of India's pride and interests, भारत के अभिमान, सुख और दुःख को आझमाकर श्रम करनेवाला स्वयंसेवक। भारताचा अभिमान बाळगून सुखकरता, दुःखहरता आणि स्वतःवर विश्वास ठेवून काम करणारा स्वयंसेवक.

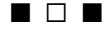
One Narendra stands at the Southern tip of the Indian subcontinent on a towering rock pedestal keeping a watchful vision on his enslaved country and its mind under foreign rule during his lifetime (1863-1902). Another Narendra now stands on the ramparts of the Red Fort in Delhi overseeing his free country that has shackled itself inspite of the hard earned freedom. The spirit of both Narendra seems to be all about transforming the Nation's mindset and unleashing its free spirit.

A Lotus flower seems to blossom with sunrise in the waters of a lake full of silt and intermingled roots of various species of plants and life.



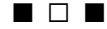
काम करने का और करवाने का तरीका

पंतप्रधान मोदी कहत, मैं खुद कुछ नहीं करता,
सिर्फ ध्यान से सब लोगों की सुन लेता हूँ और फिर
निशाना लेकर जो काम करना होता है,
उसे अधिकारियोंको पूरे जिम्मेदारियोंसे सोंप देता हूँ।



कचरा और सफाई : Trash and Cleanliness

कहत मोदी भाई, 'खुद का कचरा खुद उठाओ, और खुद के मन को साफसुथरा रखो।'



जागृती : Self Enlightenment

Self-enlightenment is an individual pursuit. It seems to be all about perceiving life as it is and not about scholarship or intellectualising life. It is in the domain of every individual to experience life in order to comprehend universal truths and self-enlighten our own Self. Expressing it in other audible words:

स्वतःचा उद्धार स्वतःच करायचा असतो ! आध्यात्मिक जागृती करून प्रत्येक मानव स्वतःचा उद्धार स्वतः करतो.

खुद का उद्धार खुदको ही करना पडता है। इसी का नाम जागृती है।

That is why it is called Self-enlightenment.

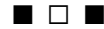
Self-enlightenment does not come from taking a bath in Ganges or circling around a Temple, Church, Mosque, or Dargah.

Extending this basic concept, the wisdom of life prompts that blind faith that blinds reality becomes self defeating and counter productive. While Narendra Modi dedicates his life energy to serve Motherland and enhance his own consciousness, it is equally essential that each citizen of India dedicate personal energy to participate in the enjoined national effort.

Thousands of individuals, small and large independent social groups and Non Government Organizations (NGO's) relentlessly address painful issues in the social fabric of India. One such example is a TV show titled Satyameva Jayate (सत्यमेव जयते), which is fathered by Aamir Khan (आमीर खान) is just one such example. He

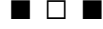
reminds his audience that Truth is usually bitter (सच कडवा होता है।). While the Indian Nation is advancing in the technological front in the 21st Century, Aamir Khan's TV program focuses on bitter Truths of Indian social fabric that are holding India back. It is like simultaneously pressing the car's accelerator and brakes while trying to drive forward. This scenario reminds us that India as an Independent Nation with democratic self governance must self-enlighten itself. It is naive to expect that Modi as a Prime Minister or his BJP party alone can accomplish the Titanic task of managing and uplifting India with its 1.25 billion citizens.

While Modi and his Government tries its best to change and transform India's languishing psyche, the active participation of each citizen at an individual level will make any dream possible. National pride is all about performing our own job to the best of our ability.



गरमा-गरम चाय

नरेंद्र मोदी गरमा-गरम चाय पिलाकर,
देश के दिल को बहलाने वाला स्वयंसेवक।
स्वयंसेवक जो भक्तिभाव से मन में प्रार्थना करता रहता है,
'नमस्ते सदा वत्सले, मातृभूमे'।



Convocation Address

Self luminescent Narendra Modi delivered a sparkling convocation address at the All India Institute of Medical Sciences, New Delhi, INDIA (<http://www.aiims.edu>) on 20th October, 2014. In his typically original style, he prompted and asked :

- Why is the Convocation such a somber and serious faced occasion?
- Invite 20-30 teenage students from under privileged group as special guests to the Convocation to expose them to the possibilities of future and challenge their imagination for higher goals in life.
- Addressing the graduating class, he reminded them, 'Never forget to acknowledge the multitude of individuals and experiences that silently contributed to your being here today. These include the Rickshaw driver that brought you to the dormitory at AIMS the very first time you arrived in Delhi, the corner tea vendor that offered you a hot cup of tea in cold winter night while you were studying for your exam, and numerous other common folks that facilitated your struggle to Graduate at the Convocation today.'

PM delivers Convocation Address at the 42nd Convocation : <http://www.narendramodi.in/pm-delivers-convocation-address-at-the-42nd-convocation-of-aiims/>



Motto, Wisdom, Manifesto and Invocation

Modi's personal motto : श्रमेव जयते। (serving alone triumphs)

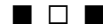
Indian National motto : सत्यमेव जयते। (truth alone triumphs)

Einstein's wisdom : Invention is 1% Inspiration and 99% Perspiration.

Modi proposes universal manifesto for the United Nations Organisation (UNO). The motto is encapsulated in a Sanskrit invocation:

सर्वत्र सुखिनः सन्तु। सर्वे सन्तु निरामयः। सर्वे भद्राणि पश्यंतु।
मा कश्चित दुःखमाप्नवेत्। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः।

The meaning is: May all be happy, may all be healthy and free of disease, let only auspiciousness be there to be seen and experienced by all, and let no one have pain and suffering. Three times repetition of the word peace / शांती implies may there be peace in me, in the surroundings and divine acts (आध्यात्मिक, आधिभौतिक आणि आधिदैविक). To attain this level of global consciousness, Modi proposed during his address to the United Nation General Assembly that UN adopt a Yoga Day as an affirmation.



India's Successful Orbiter Mission to Mars

India's very first successful Orbiter Mission to Mars reminds us that the Spirit of Exploration knows no bounds and challenges human ingenuity at every step.

India's indigenously produced spacecraft successfully locking on to Mars orbit on 05 Nov, 2014 in its very first attempt is a great tribute to the entire Indian scientific community and its pioneers. A short list of pioneers from various scientific disciplines displaying vision, inner confidence, and dedication includes Dr. C. V. Raman, Dr. Bhabha, Dr. Vikram Sarabhai, Dr. Shanti Swaroop Bhatnagar, Dr. Satish Dhawan. Dr. Chandrashekhar, India's ex-President Dr. Abdul Kalam and their innumerable associates with their Titan Spirit of exploration. The joint commitment and consciousness of the scientific community of India over the years deserves full credit.

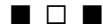
In a similar Spirit of exploration, we include the Titans of India's explorers of the Inner Spirit of human consciousness. Indians humbly refer to them as Rishi, Muni, Buddha, Sufi Fakir and by other words except the grossly misinterpreted word Religious Preachers.

Congratulating the entire staff of Indian Space Research Organisation (ISRO) of India the phenomenal success of the very first Mars Orbiter Mission, Prime Minister Modi assured them that his Government is with them not only to celebrate success, but will actively support ISRO specially when a space mission falters and feels

disappointed.

In his book titled “Wings of Fire”, India’s ex President Dr. Abdul Kalam eloquently narrates the trials, tribulations and experiences in pioneering Rocket Engine technology in spite of limited resources and bureaucratic lethargy. Ultimately the spirit of dedication trounces.

The dedicated spirit for exploring the outer as well as inner dimensions of space complement and reinforce each other. The innate philosophy of human consciousness prompts that the “Outer Universe is identical to the Universe that lies within each one of us”. Experiencing it with Physical Sciences as well as Introspective Faculties makes each one of us complete and an integral part of the dynamic Universe.



NRI and OCI

The Non Resident Indian (NRI) and Overseas Citizen of India (OCI) appear as a strange breed of new cast in the Indian context.

Dear NRI and OCI, you left India and spread out worldwide to stake out your individual fortune. That is understandable in the context of the changing times and opportunities. With a split sense of loyalty you ask now what will Modi Government do for you?

Just remember the buoyant John F. Kennedy's words in his inaugural speech as President of United States of America "Ask not what the Government can do for you. Ask what you can do for the Government".

Commit your planned investment of time and energy for India to reap a better Return on your Investment and surprise yourselves with the changing dynamics of India.

NRI being a relatively new Indian term, which was introduced during the past 20 years, many locals still ask out of curiosity, Who is an NRI ? ना रहनेवाला इंडियन ? It is pertinent to note that during the 200 years of British rule of the Indian subcontinent before India's independence in 1947, Indians have emigrated and settled in foreign lands. In today's terminology, they are also NRI.

NRI is a word that spells out several mixed dimensions of Indian personalities, which are sprinkled liberally

around the globe. NRI is one that is physically absent and lives far removed from homeland, its language(s), history and heritage; akin to a farmer not tilling and harvesting the native land of conscious awareness.

NRI is also one that lives in own homeland India, but moves around carrying a deafening aura of colonized mind. and shouldering pride in alienating from locals by speaking a foreign language with an Indian accent, prides in wearing foreign attire, and even crapping in the foreign ways. Dr. Oz, an American medical professional recommends that crapping in Indian squatting style is the most desirable posture for the human body.

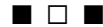
From yet another perspective, homeland is our very body that we dwell in constantly from the first breath to the last, that offers an opportunity to maximize ourselves. It is a place of conscious awareness in the dynamics of an ever changing world.

Within the first 11 months after assuming office in May 2014, PM Narendra Modi has addressed NRI audience notably in Tokyo (Japan), Seoul (Korea), Bhutan, Kathmandu (Nepal), New York (USA), Melbourne (Australia), Berlin (Federal Republic of Germany), Paris (France), Toronto (Canada). Delivering the entire speeches in pure Hindi, he suggested that " A nation or individual that forgets or is not aware of the history, language and heritage of homeland, also loses the capacity to create history. "

Modi humbly suggests that the red blood flowing

through the veins of NRI's carrying the Indian DNA is identical to the red blood flowing in his veins. He boldly asks each NRI to support the cause of ' Make in India ' in mutual interest.

A national leader of his own stature speaking in the national language, brings out the real spirit and fragrance of his message. Modi expresses himself eloquently in Hindi, in spite of his mother tongue being Gujarati. In modern world there are excellent professional translators to provide simultaneous translations of speech in any other language; which has been routinely done in all United Nations General Assembly meetings for the past several decades. Needless to say that these speeches addressed specifically to NRI audience abroad are readily available on Youtube.



Aspirations : आकांक्षा

The lyrics of two compositions that throb the heart of Indian mind on 15th August, India's Independence Day, seem to be the National Anthem and 'Aye Mere Watan Ke Logon' (ऐ मेरे वतन के लोगों).

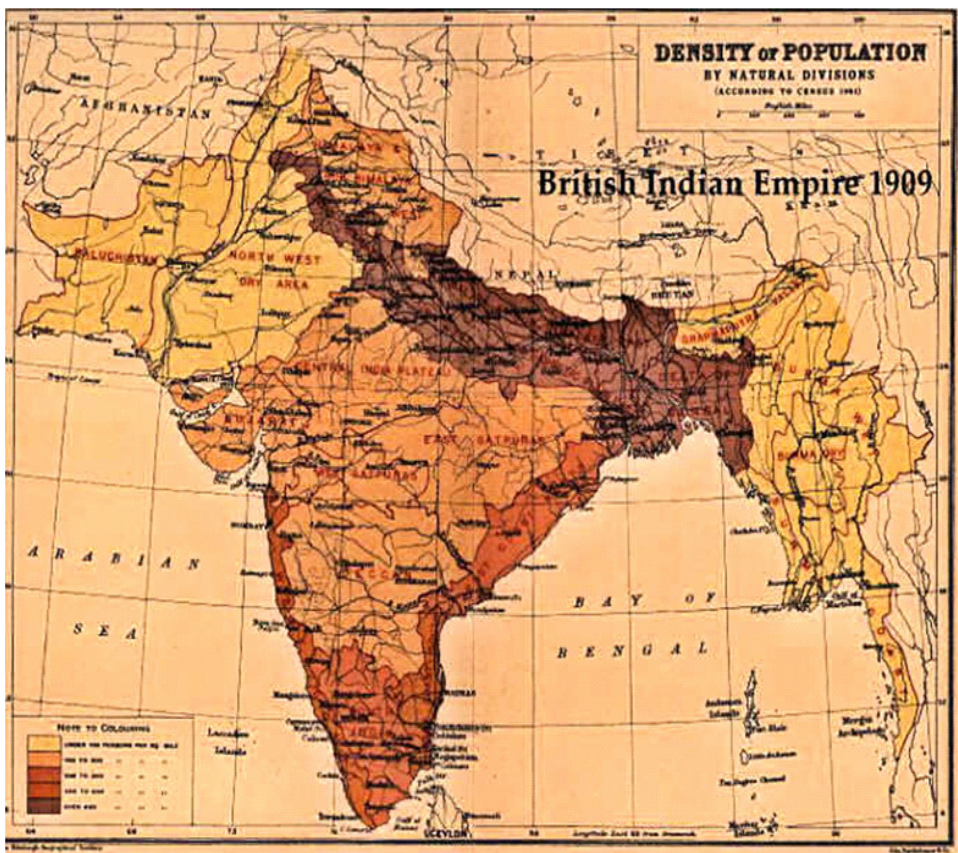
1. National Anthem of India - Jana Gana Mana. जन गण मन ।
(<https://www.youtube.com/watch?v=kCiviB9BDVk>)
2. Aye Mere Watan Ke Logon ए मेरे वतन के लोगों ।
(<http://www.youtube.com/watch?v=zkpm3pc585l>)

Aspiration may be considered as durable inspiration in the context of the stride of India in the 21st Century for fulfilling the aspirations of the common man in harmony with the total national environment.

‘जन गण मन अधिनायक जय हे’ is the beginning lyric of the National Anthem of India. Written in highly Sanskritized (Tatsama) Bengali, it is the first of five stanzas of a Brahmo hymn composed and scored by Nobel laureate Rabindranath Tagore. It was first sung in Calcutta Session of the Indian National Congress on 27 December 1911. The heart of the Indian subcontinent was aspiring for freedom from the British occupation since the 1650's. At that time, the map of British ruled India was as shown below. This is the map outline that I drew in my Geography class as a high school kid during 1942-1948. Geography being my most favorite subject in high school, I was well aware of the national borders. The drums of freedom were gradually sounding louder.

However, towards 1946-47 there was whisper that the country may be divided on cow-pig religious issues.

During those years (1942-48), I was transitioning through the age of 10 to 16; secretly wishing that the map of India that I had fondly drawn in my geography class would remain intact. I had sensed that all people of my hometown, Nagpur, seemed to have similar body language and ways of entertaining life, although they spoke different languages and had different skin colors ranging from black to brown to fair. By virtue of being the geographic center of India, Nagpur always has had a generous presence of every religious and linguistic community of the country.



During early 1900, British rule had already spun off India, Burma and Ceylon as separate territories probably for easier governance. The territory of British Indian Empire as shown in the above map gained Independence on 15th August, 1947, but simultaneously fragmenting into India and Pakistan as two separate countries; the result of a bartered arrangement through the intermediary of the British. As a high school student at that time, I sensed that the fracture occurred primarily due to ego driven cow-pig squabbles. As a result, both India and Pakistan celebrate their Independence day on 15 August. A few decades later (March 26, 1971) the Eastern segment of Pakistan split away naming itself Bangladesh seemingly due to linguistic issues. Titan Ego that does not seem to dissolve easily, seems to invariably trounce over wisdom of the time!

Each country with its newly defined borders within the subcontinent embraced its own National Anthem. In the light of these developments, it seems that India's National Anthem that was initiated in 1911 is now being sung out of context as shown below.

The National Anthem of India in Devanagari Script :

जन गण मन अधिनायक जय हे ।
भारत भाग्यविधाता
पंजाब सिंध गुजरात मराठा
द्राविड उत्कल बंग
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंगा
तव शुभ नामे जागे

तव शुभ आशिष मागे
गाए तव जय गाथा
जन गण मंगलदायक जय हे
भारत भाग्यविधाता
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय जय हे ।

A simple question arises, why is the freed country still being identified as India, while addressing it as भारत (Bharat) in the National Anthem ? It was the spirit of this National Anthem that had united all Indians, irrespective of religious and linguistic differences, to aspire for Independence from the British rule ever since the Sepoy mutiny of 1857. Will someone identify where is Bharat and Sindh located in the current map of India shown below?

From my perspective (Born in 1932) the map of current India looks as if my high school image of India has been chewed up by rats around the upper half along the Eastern, Northern, and Western borders. It may not make an emotional difference for Indians born after the country's Independence in 1947 because this is the map they will see and study in school.



While the country is free and independent since 1947, its mindset still displays residual signs of enslavement which is audible from the body language of its inhabitants. The educated that claim to be modernized seem to be woefully westernized and a big emotional gap exists between them and rest of the rural India.

Take a walk of 100 kilometers (60 miles) on your own feet out of a big city limits to feel the difference. Would some of the so-called modernised, unconsciously sing the National Anthem in a customized way as follows (obviously I am exaggerating to make a point!).

जन गण मन अधिनायक जय है
INDIA भाग्यविधाता
पंजाब INDUS गुजरात मराठा
द्राविड उत्कल वंग
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंगा
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मागे
गाए तव जय गाथा
जन गण मंगलदायक जय हे
INDIA भाग्यविधाता
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय जय हे ।

India and Indus are clearly not words derived from Tamil or Sanskrit, which are the two oldest languages originating on the subcontinent and represent a distinct civilization. It is not the intent of this composition to survey the historical origins of these two words, Indus and India.

It behooves India to wake up to its inherent cultural identity, which is intertwined with the distinct civilization of the entire subcontinent. Since ancient times, the entire subcontinent has been identified locally as Bharat

(भारत) as well as Aryavarta (आर्यावर्त), which implies the land of the original inhabitants. Shri Vasudev of the Isha Foundation points out that the names Hindustan and Hindu Kush Mountains are ancient geographical identities similar to neighboring regions identified as Afghanistan, Waziristan, Turkistan, and others. The words ending with the letters “stan” simply imply a place; a geographical identity.

Astronomical predictions peg the popular folklore about King Rama of Ayodhya around 8000 BCE; and Krishna of Mathura around 5000 BCE. The Carbon Dating System pegs the Mohenjo-daro civilization in the province of Sindh around 2600 BCE. Any old timelines have to be taken with a pinch of salt!

The word Bharat ‘भारत’ represents an ancient self-enriching cultural heritage of the Indian subcontinent. It has consistently entertained an all-inclusive universal philosophy and a way of life, which has been seeded by self-enlightened Masters of this soil. The self-enlightened Masters of Bharat such as Tukaram and Kabir passionately sang lyrics communicating universal wisdom such as “My body is the place of worship of my divine Consciousness” (माझा देह, माझ्या देवाचे मंदिर). Kabir who was a Muslim Fakir was once asked,

"Kabir, do you know, who your God is?"

Kabir coolly replied, “God knows me”.

Unfortunately, all traditional religions choose to ignore the free spirit of the saints, fakirs and mystics.

There was a conscious effort to incorporate the self-enriching universal philosophy of life in the Indian National Emblem with the inscription in Devanagari सत्यमेव जयते; 'Satyameva Jayate' expressed in literal English. Its meaning 'Truth Alone Triumphs' is a mantra affirmation derived from the ancient scripture Mundaka Upanishad. Adopted as the National Motto, it is inscribed in Devanagari script at the base of the National Emblem. The emblem and the words 'Satyameva Jayate' are also inscribed on one side of all Indian currency. The emblem is an adaptation of the Lion Capital of Ashoka (http://en.wikipedia.org/wiki/Lion_Capital_of_Ashoka) which was erected around 250 BC at Sarnath, near Varanasi in the North-East Indian state of Uttar Pradesh.

In a truly secular and free India, each individual may freely entertain the idea and ideal of a personal God, while being mindful and respectful of other enabling ideas and ideals. Freedom automatically implies responsibilities for mutual respect; and that is where good governance plays an effective role. In a truly diverse India, appeasement of none and legitimate freedom for all; has been voiced by the newly elected Prime Minister, Mr. Narendra Modi.

With blurred self-identity, India seemed to have gone into a virtual coma for the past 1500 years. The blame game stops where it begins; at the footsteps that surrender innate freedom and identity. With changing mindset and recently renewed aspirations, the country may come out of its coma and identify itself again as Bharat.... the land of the self-enlightened Masters (ऋषि,

मुनी) that prompt exploring the immense possibilities of life here and now, as well as in the boundless Universe; seeking our true self-identity and its purpose.

In the past decades since independence, it has been saddening to witness the wild weeds grown in the fertile soil of Bharat. Renewed hopes and aspirations through the national elections of 2014 hold promise, provided everyone participates actively and responsibly. No one has a magic wand!

By sheer demography, India is reportedly poised to become the World's youngest population by 2020. Addressing this precious young asset of the country, our Mother wrote in the book titled Seamless Generations, 'The texture of thoughts condense into our actions and their consequences. We receive what we deserve, and not what we desire.'

While the drama of life within families and nations goes on unabated, our aspirations of an emotionally unfragmented Indian subcontinent may still become a reality in the 21st Century without even changing the borders of India, Pakistan, Bangladesh, Myanmar (Burma) and Sri Lanka (Ceylon). This may happen because people of the entire subcontinent speak the same body language and may start exchanging goods and goodwill, which they have subconsciously shared over the past several millenniums.

All of us live in a borderless Universe, but unfortunately get bogged down by physicalities and their self-imposed limitations. International borders with

controlled porosity may allow fresh air to pass through and invigorate both sides of the border. Self-enriching ideas and sustained committed efforts help realise youthful dreams faster.



हमारा वतन

हमारा वतन केवल हमारी जन्मभूमी नहीं। इस जन्मभूमी से जुड़ी हुई संस्कृतिपर आधारित जीवनशैली और सभ्यता की पहचान है, जिस में वैश्विक सोच बुनी हुई है। यह वैश्विक सोच सांप्रदायिक धर्म रूप नहीं, केवल आत्मज्ञान और आत्मबोध की अनुभूती है।

भारत वतन के मिट्टी से ही बना और पला हर इन्सान भारतरत्न है। अपनी अपनी सोच रखते हुए, हम सब मनोसंकल्प से और समझदारी से जुड जाएँ, तो जमीन और आसमान से हमारा जो कुदरती रिश्ता है, उसे आझमा सकेंगे और खुदकी असली पहचान की अनुभूती (inner realization) पा सकेंगे।

भारत के हर एक नागरिक का वतन एक ही है,
चाहे वो गोरा काला या browny चॉकलेट हो, गरीब या अमीर,
कंधे से कंधा लगाकर, कदम कदम बढ़ाए जा, जय हिंद।
यह भारत के आधुनिक जवानों का आदेश महसूस होता है।

हम सबका मालिक सिर्फ एक ।



Duet : जुगलबंदी

The interrelationship of Duet and Duality expresses itself through various common life examples including, mother and child, male and female, exchange of breath (life energy) between humans and the plants, teacher and student, creator and creation.

The above thoughts involuntarily telescoped into the thought about an Orchestra.

The very word Orchestra triggers on our mental screen images of a gorgeous music hall, a Conductor on the stage directing and coordinating a group of musicians, playing their respective instruments, to harmoniously play a chosen musical composition.

During the 3-month summer vacations of 1942 to 1945 we five siblings visited our parents in Dantewada in Bastar State. During the school session, all five of us stayed with our maternal grandparents at Nagpur, Madhya Pradesh to pursue our education. Dantewada was a very small town then, contained within 2-3 square mile area. Situated at the junction of Shankhini and Dunkini rivers, it was surrounded by thick and lush green forest. From our residence we walked barely one mile to cross the river and find ourselves in thick forest.

In the total absence of electricity and associated devices, Dantewada had its unique aura of quietness and peace of predictable daily life. Every day, our whole family would take an early evening walk in the

forest across the river. Following skimpy walking trails (पगडंडी/पायवाट) in the forest, we enjoyed collecting samples of flowers, berries (चिरोजी) and fruits (आम, जामुन/जांभूळ) along the walkways.

Invariably on weekends, due to our father's day off from work, we would go for an extended 2-3 hour early morning walk in the forest after morning tea. In the forest, we explored uncharted paths just for the fun of it. It seemed like a randevu with Mother Nature and its different paths sprinkled with a warm feeling of family togetherness.

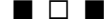
One day as we were deep in the thick of the woods, our father suggested we all sit down quietly for a few minutes and listen to the numerous interesting sounds around us. We all did and in those silent moments we heard the Orchestra of Nature directed by a seemingly invisible Conductor. There were innumerable audible sounds of creatures, birds, wind rustling and whistling through trees and dry leaves on the ground, In that comfortable steadiness, we could even hear our heart beats, and feel the automatic rhythm of our own breath. Totally devoid of any other strangers around us at that time, each one of us seemed to have experienced the unique feeling of becoming totally devoid of our own selves.

All seven of us (parents and we five siblings) were listening to the Orchestra of Nature while sitting comfortably in the naturally air conditioned gorgeous and roofless Green Hall. In those surrounding moments, we seemed to experience a soulful relationship with all

elements of Mother Nature. Expressed in Hindi 'इस पूरे माहोल के साथ हमारा एक कुदरती रिश्ता महसूस हो रहा था।'

इस समय मेरी उम्र थी १०-१३ सालकी, परंतु आज ७०-७२ साल के बाद भी, वह निसर्ग की मधुर आवाजों का Orchestra और उनका सुबह और शाम का अलग composition अथवा सूर याद है।

आज, ४ डिसेंबर २०१४ के शांत प्रातः समयमें, मुझे नरेंद्र मोदी और भारतके जुगलबंदी का अहसास हो रहा है।



Bastar, Chhattisgarh

This morning, as I pondered over the conclusion of this book titled Narendra Modi. I received an email from my friend Shri. Shastri who resides in Oakville, which is on the outskirts of Toronto, Ontario, Canada. Shri communicated the following message :

Suresh,.....Here`s the attachment covering news from your good old pristine stamping ground CHHATTISGARH from BBC news, (DEC. 01/2014). May be you already know all about the current situ over there. SAD state of affairs for sure!.....Shri

<http://www.bbc.com/news/world-south-asia-12637562>

The above mail and its attachment with a recent BBC report on Chhattisgarh touched a sensitive chord in me and I responded;

Shri,..... thanks for the “forward” news on Chhattisgarh. Yes, I am more than aware of the pattern of the radical changes over the preceding 82 years because I have breathed this history. The piece of landmass called Bastar (which is now a part of Chattisgarh) that has given me heavenly pleasures and experiences during my first 15 years of life, has now been sowed with Rapeseed, bastardized, and the resulting new crop is the unpleasant present state of affairs.

Fortunately, my pleasant memories of good old Bastar State during 1932-1947) that I carry stay intact within

me for my lifetime. I have penned some of them sporadically in my writings to share with the readers its aroma, flavor and beauty. In absence of it, the newer generations may never know what has changed. I feel blessed to have lived that history.

Based on my personal experiences, I often ask innocently, is the Nation moving forward or backwards when it comes to conscious awareness and reality of existence! The relative changes in Bastar over the years have wiped the innocent, effortless and radiating smiles off the faces of local Muriya and Maria inhabitants.....Suresh

Recognising the enormity of languishing challenges confronting India in modern times, it is understandable why the citizens of India have voted offering a comfortable majority vote and victory for Mr. Narendra Modi and his Bharatiya Janata Party (BJP) in 2014 National elections.

On one side of the National broad spectrum, the scientists are programming and managing the indigenously produced spacecraft that is successfully orbiting the planet Mars. On the other side of the spectrum, as a typical sample, is a 600 - mile stretch of land extending from central Indian forested region encompassing Chandrapur (Maharashtra), Chhattisgarh, Bihar, Orissa and North-East Frontier States. This region is very rich in natural resources and inhabited by economically challenged population lacking in basic education, sanitation, and infrastructural support. The rich natural resources of this area have

been extracted for industry or exports, but the revenue generated from it has been grossly misappropriated by scrupulous political management without benefitting the native occupants of the region. The rivers of this region, which once flowed with skyblue waters, now have polluted waters due to indiscriminate industrial activity without regard for the ecology, green cover offered by forests and public health issues. Seems like a world wide pattern!

As a typical sample of this region, I would like to cite the example of Bastar. During 1942-1945 we lived in Dantewada, a district of Bastar, where our father was posted as Sub Divisional Officer (SDO). During the summer holidays, our family would often trek the beautiful Bailadila mountain range from the base camp named Carlee. As we trekked up the lush green mountain range, we would cite large chunks of rocks that shined like steel. We learned in later years that the Bailadila mountain range was indeed one of the richest iron ore deposits in the country. During our trek in day light time, we would occasionally pause to drink the ice cold and pure water of a brook that flowed down the mountain. We would just drink the water directly from the brook by holding our palms together. It was a heavenly feeling in the summer temperatures ranging from 100 -110 F. The green cover complemented with gentle breeze offered heavenly feeling.

However, the rich iron ore deposits attracted hungry profiteers to indiscriminately tap the natural resources and now the waters of the brooks, Shankhini, Dakini, and Indravati rivers and the majestic Chitrakoot falls

flow with brown colored polluted waters; blessings of the iron ore mining and processing enterprise. My heart cries out for the local inhabitants, flora and fauna.

The local inhabitants of Bastar were a congenial people, respectful of law and order, and innately hard working. However, over the decades in Independent India, there has been inadequate communication between the Government and the native residents that have been unfortunately referred to as Tribal, which has a connotation of lower cast in the Indian social context. The natives have rightfully felt ignored by their own Government and the anger has found expression through the barrels of guns aimed at the Governing authorities. Broken trust always extracts a heavy toll on both sides of a conflict. The locals have been labeled by Government as Mao Terrorists. The locals on their part are saying 'माँ ओ, धरतीमाता, दंतेश्वरी माँ, अब तूही हमारी रक्षा कर सकती है।' The Government and the locals continue to speak two different languages! Modi Government seems to be aware that it has the responsibility to break the decades long stalemate. This picture reflects throughout the entire belt of so called Tribal belt (आदिवासी).

Mr. Modi has rightfully defined Terrorism as the war between Humanity and Inhumanity, which now demands firm affirmative action and governance right at home first along with the Terrorism instigated from abroad.

Addressing the broad range of issues adequately nationwide in a reasonable time frame is the challenge for Modi's governance. The challenges simultaneously

include addressing the national Gross Domestic Problems (GDP) and managing the National Debt that will be necessary to sustain all of the required actions. The Nation does not expect miracles; just reasonably assured and measurable solutions. Forward movement in meeting the Nation's expectations and glimmers of hope will engage all citizens.

A meaningful and balanced transformation of India (भारत) is overdue. My personal patience is limited because the time on my hands is limited.

This seems to be the outline of some challenge for PM Modi's governance. May the positive changes take effect from ground up while still retaining the inherent beauty and fragrance of its simplicity



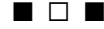
Sketch by Usha Deo

Foreign Relationships

Tavleen Singh (तवलीन सिंग), Indian columnist, political reporter and writer for The Indian Express, remarked during her recent travel to USA for covering Prime Minister Mr. Modi's first official visit to address the U.N. General Assembly and meet the U. S.

President Barack Obama. 'अमेरिका और भारत के बीच एक कुदरती रिश्ता महसूस होता है। With China, India can only minimize mutual differences.'

Modi Government plans to launch Indian satellites over India in a quick timeframe to optimize active communication and cooperation with all neighboring countries.



Seamless Generations

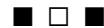
The generations, now in the age range of 70s and 90s, were born in British ruled India, where as Narendra Modi is born in post 1947 Independent India. The broad experiences of our existing generations born during pre-independence India include :

- Stalwarts of all religious communities worked tirelessly side by side over a century to free India from the British rule. Many sacrificed their lives for the common cause. However, at the juncture of gaining Independence, Hindu and Muslim thought split apart with egoistic differences, splitting the Indian subcontinent into two separate countries namely India and Pakistan. In the process millions had to migrate away from their homes and millions lost their lives due to raging animosities. Millions had to painfully redefine their homes and themselves.
- Post independence border wars between India and Pakistan have claimed lives of thousands of Indian soldiers.
- A direct reflection of the border wars claimed the life of my younger brother, Major Surendra Deo, in 1965. From our personal family loss, we can gauge the feelings of innumerable families that have lost their dear ones as a result of the fracture of the subcontinent. My brother wounded fatally on the battlefield on the Sialkot Sector

died barely 8 days before his son's first birthday and 10 days before his own 31st Birthday. Forty nine (49) years after the incident, his son, Ashwin Deo, eloquently wrote about his own pain "*Major Surendra Deo! Father! BOZO! Mystery! Enigma!..... died 8 days before my first birthdayin action, 16-09-1965.....Indo Pak war!!! 49 years ago!!!! Wonder if it was worth it!!!!!! A strapping young man, all of 31.....Do you ever regret that in spite of your supreme sacrifice, the hatred continues!!!! May your soul rest in eternal peace!!!! You did what you had to do!!! Wonder If I will do even a tenth of what you did!!!! God Bless you, my old man !!!! "*

- Reportedly, several Indian POWs (Prisoners of War) still languish in Pakistan jails.
- And life goes on rolling forward gathering no moss!

Now Prime Minister, Narendra Modi, nation's constitutional Democratic Governance, and each citizen has the unique responsibility to weave a vibrant new social fabric for the Indian subcontinent by blending threads of the past and new threads of the 21st Century. Wishing all necessary wisdom and power for success of the joint efforts and responsibilities.



Our India

This morning a thought filtered in mind which offered promise to conclude this book titled Narendra Modi. I am not known for brevity in my writings because I remember every event witnessed since my age of four (4). So I blame the lack of brevity squarely on my mind and memory.

Our India was the title of our English textbook for 9th grade in 1945. Authored by Minoo Masani, the book brilliantly and briefly presented India for our minds and grasp at that age. Having experienced colonial India until 1947 and free India since then, I try vainly to grasp the Indian mind as a nation. Our memory seems to be a bewildering composite of the past, present and curiosity for the future and the unknown, while realizing fully that we will leave all of it behind when we leave this world.

Over the past 82 years of my life to this day I have heard several songs and slogans reflecting the Indian mind and mood of the times. Some of them include :

१. इन्किलाब जिंदाबाद, कोमिनारा जय हिंद ! (I still dont know what it meant!)
२. आज हिमालय की चोटी परसे, हमने ललकारा है।
दूर हटो, दूर हटो दुनियावालों हिंदुस्ताँ हमारा है।
३. हमारा भारत महान ।
४. ए मेरे वतन के लोगोँ....
५. मंगल (Mars) पहुँचकर, उसके चक्कर से हमारा मंगल ही होगा।

Between slogans and reality, नारे और सत्य, तारें और सितारें, lies a huge gap that constantly begs to be filled.

Each one of us seems to be a composite of our own mind, memory, intellect and biological identity that modern scientists describe as DNA. The scientific DNA may not represent our complete individual identity. The introspective and self-enlightened Masters of the land called भारत / India perceive a universal identity for each one of us that makes us complete. I have tried to encapsulate that thought vibration and its wisdom in the opening title in this book with the caption in Hindi 'जनता जनार्दन स्वयंसेवक.' My wife Usha Deo has mentioned in her book titled 'Many faces of Women' that the word Women is inclusive of the word 'men', which makes each one of us complete.

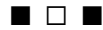
Our India / भारत remains an ever vibrant universal Energy to be experienced by every Seeker of universal truth which is reality.



Healthy Opposition

Within the framework of democratic governance, a healthy opposition is not only desirable, but absolutely essential. However, each member of the opposition has to remember that the Nation's overall health has to be supported with creative solution oriented plans within small transparent timeframes, rather than bombastic 5-year plans and empty promises of deception. The solutions have to defy the gravity of issues and seep from bottom to the top.... just as a tree grows from the ground upwards while constantly nourishing the surrounding environment.

Opposition for the sake of just opposing views is a very self-destructive force for the nation.



दवा और दुआ : Medicine and Grace

जब कोई भी दवा काम नहीं करती,
तब सिर्फ माँ की दुआएँ, कामयाब होती हैं ।
माँ के पैरों तले ही, मिश्र अथवा स्वर्ग है ।
इसी कारण अदबसे झुककर, माँ के चरण छूँ जाते हैं ।
सिर्फ माँ को Hi Mom को कहके दूसराही भाव प्रगट होता है ।
पूजनीय भारतीय जीवनशैली में सूक्ष्मता से संस्कार बूने गए हैं ।
हमारी संस्कृति हमारी सोच, अदब से बोलने का ढंग और
सभ्यता से जाहिर होती है ।
संस्कृति, कोई गहेना नहीं,
जिसे गलेमें सौंदर्यभूषण जैसे लटकाया जाता है ।

युगोंसे भारत यह हमारी सांस्कृतिक सोच और पहचान है ।
जैन, हिन्दु, यहूदी, बुद्ध, ईसाई, सिख
ये केवल धर्म सम्प्रदाय है ।
सामाजिक धर्म सम्प्रदाय, सिर्फ हमारी ऐतिहासिक पहचान है ।
पीछले ३०० सालसे ।
INDIA, Mt. Everest, Banaras ऐसे शब्दोंसे,
भारत की नकली और परदेशी पहचान हो बैठी है ।

हर एक इन्सान, खुद की वंश परम्परा,
३ से ५ पिढियों तक माप नाता है ।
उसके पहले की पिढियाँ इतिहास में जमा हो जाती हैं ।
Scientific भाषा में,
पुरातन पिढियों की परंपरा DNA में नापी जाती है ।

DNA = Biological evolutionary identity at cellular level.

परन्तु, हमारी आध्यात्मिक ज्ञानपरंपरा नापी नहीं जाती ।
हमारे मन की गंगा और दिल की जमुना का जब संगम होता है ।
तब उस मन्गलसे एक स्वयंभू सरस्वती की जानधारा
निकलकर बहेती है ।
सरस्वती, ज्ञानरूप और स्वरूप है;
अंधश्रद्धा से पूजा का विषय नहीं ।
वैसेही शिव-पार्वती अथवा गौरीशंकर (Mt. Everest).
ये भी अंधश्रद्धा के विषय नहीं; एक गहरी आध्यात्मिक सोच है ।
शंकर अथवा महादेव,
सृष्टी और जीवों के निरन्तर परिवर्तन का तत्त्वस्वरूप है ।
महादेव तत्त्व से ज्ञानगंगा, अर्धनारी नटेश्वर,
नृत्य और संगीत जैसी धाराएँ निकलती हैं ।

अंधश्रद्धालु बनना या बनाना आसान होता है;
आत्मज्ञान और आत्मबोध अनुभूती है, आझमानी होती है ।

भारत अखंड वतन है, जिस में पैदा हुआ इन्सान सिर्फ भारतीय है।
पूरे अखंड भारत की एक ही संस्कृती है,
जिस में इंसानियत अथवा मानवता एक ही धर्म अथवा सोच है,
और उसका नारा नहीं, सिर्फ एकता ही अनुभूति ।
साथ ही साथ खेले, कूदे, रोएँ और हसे;
इसी का नाम है मंगलाय, जिंदगी या तरक्की !

हिन्दु अथवा सनातन (timeless) ये जीवनशैली है, जिसे अथर्व
वेदमें सहजता से समाया गया है ।

Atharva Veda (~ 4000 B.C.)

We all are the birds of the same nest.....

Wearing different skins,

Speaking different languages,

Believing in different religions,

Belonging to different cultures,

And yet we share the same home , our earth

Born on the same planet, covered by the same skies,

Gazing at the same stars

Breathing the same air,

We must learn to progress happily together,

For humans can live individually

But can only survive collectively.

Pure gold cannot be tarnished by any chemical.



धर्म, आध्यात्म और स्वयंसेवक

धर्म और आध्यात्म में जमीन और आसमाँ का फर्क है। धर्म ज्ञान भण्डार है। आध्यात्म एक अनुभूति Inner experience है।

हैवान - अज्ञान का रूप और स्वरूप। हैवान, वो इन्सान है जो खुदको ही ठीक ढंग से पहचान नहीं पाता।

हैवान को इंसान बनने का रास्ता दिखलाता है गुरु अथवा सद्गुरु।

गुरु - ज्ञान के भट्टी की ऊष्णता में पिघलकर बाहर निकला हुआ पवित्र सोना है।

सद्गुरु - सब जीवों का सदा सर्वदा भला ही चाहनेवाला आत्मज्ञानी।

पवित्र सोना कभी गहना नहीं बन सकता, जिसे श्रृंगार के लिए पहना जाता है। पवित्र सोना किसी भी दूषित भावनाओं से दूषित नहीं होता। Nor it is affected by any chemicals. शुद्ध सोने में दूसरे क्षार (flux materials) मिलाकर, भट्टी में (oven) पिघलने के बाद ही सोने का गहना बनाया जा सकता है। जिसे हम २०, १८, १२ या १० Carrot gold का गहना कहते हैं। सब गहने नकली सोने के ही होते हैं। उन्हें श्रृंगार के लिए पहननेवाले इन्सान भी नकली होते हैं। ये है खुदकी असली पहचान !

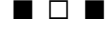
हैवान को इन्सान बनने या बनाने के लिए, जैसे गुरु की सहायता महसूस होती है वैसे ही आध्यात्म का सही मार्ग पाने के लिए खुद को स्वयंसेवक बनना पडता है, कोई गुरु किसी को स्वयंसेवक नहीं बना सकता। स्वयंसेवक वही होता है, जो श्रम-योगदान से जनता की जनार्दन भक्तिभाव से सेवा करता है।

भवसागर = भावनाओं का सागर।

भारत, अनेक धर्मों की भावनाओं का भवसागर है।

भारत या हिन्दु, यह मानवता की एक गहरी वैश्विक सोच है, जो खुद की और साथ ही साथ में, पूरे मानवता की भलाई चाहती है, इस सोच से हिन्दु एक धर्मसम्प्रदाय नहीं। जीवनशैली जीने का और आत्मज्ञान आझमाने का अथवा पाने का तरीका है।

भारत, आत्मज्ञानी ऋषिजनों की जन्मभूमि है, जिसमें ज्ञानगंगा सदा सरस्वती रूप में भेदभावों से उपर, आचार और विचारों को सम्हालकर देशसेवा कार्य कर सकें। बड़े- बड़े नारे लगाने का समय निकल चुका है, भारत की ये नई सदी और युग सभी नागरिकों को आन्हान अथवा चुनौती दे रही है।



दिल का दरबार और दिल्ली दरबार



Parliament House, New Dekhi, India

दिल्ली दरबार पार्लियामेंट हाऊस में भरता है, जहाँ स्वादिष्ट और गरमाँ गरम चाय, दिल्ली में, सबसे सस्ते दाम में मिलती है ।

दिल का दरबार आम जनता के साथ खुले मैदान में होता है । जहाँ दिल के उलझनों की बातें होती हैं । दिल दरबार में हुज्जत से खडे होकर नरेन्द्र मोदी ने अहसास दिलाया, मैं जनता का प्रधान सेवक अपने देश की समस्याओं को आझमाता हूँ, और उनको हल करने के रास्ते हम सब साथ में ढूँढ के कामयाब होंगे । इसी अनुभव के साथ, दिल्ली दरबार से हम भारत मातृभूमी की सेवा करते रहेंगे ।

आज दिल्ली दरबार से प्रधान सेवक मोदी ने ललकारा है, भाईयों और बहेनो भारत की अखंड ज्ञान परंपरा का आदर करते हुए हम सब आगे बढ़ेंगे । साथ ही साथ, हम चाहेंगे कि हमारे पडौसी देश भी, आर्थिक और बौद्धिक तरक्की करें; जिस में हम सबका भला है ।

हमने बचपन में 'इसापनीती' नामकी किताब पढ़ी थी, जिसे अंग्रेजी में Aesop's Fables कहा जाता है। Fable is a meaningful story. Following is a fable originating from the Indian subcontinent with self-revealing and enlightening morals.

सीता के पीता, राजा जनक ने सपने में देखा कि वे एकदम गरीब हो गए हैं। The dream felt so real that he woke up startled and wondered what was the reality! The question vexed him so much for days that he summoned all known wise men in his kingdom to his court to counsel him about what is the Reality !

Honoring the royal invitation, all wise men (संत, महात्मा) had assembled. After everyone was seated comfortably in the royal presence, 12-year old Ashtangawakra (अष्टावक्र) stepped in and boldly walked right in front the King.

अष्टावक्र was known for his awkward physical appearance because of eight twisted abnormalities in his body. Simultaneously, he was also known for his sharp intellect. As soon as अष्टावक्र stepped in the court, all wise men present in the court laughed at him and his audacity to counsel the King.

अष्टावक्र stood confidently in presence of the King and declared boldly " Your Majesty, I shall fully answer your quandary. " Then he proceeded and sat authoritatively on the chair, which was normally reserved exclusively for the King's chief counsel appointed by the King, The entire court was stunned.

After seating himself on the privileged chair, अष्टावक्र asked the King to order that the entire court be cleared of all the cobblers seated in the court. before offering his counsel. अष्टावक्र had said specifically, “पहले इन सब चमारों को दरबार के बाहर निकालो।”

Utterly shocked and surprised, King asked, “अष्टावक्र, how can you address all of these respectable wise men as चमार ?” अष्टावक्र replied promptly, “Those who judge a person by the color of the skin and outside appearance are only चमार. जो चमडी के रंग और बाहरी रूप से इन्सान के काबिलियत का अंदाजा लगाते है, वो सिर्फ चमार ही होते है।”

अष्टावक्र ने राजा जनक को सपना और जीवन, सत्य और असत्य, भ्रम और जीवन तत्त्व का अहसास दिलाकर आदेश दिया, “देहभक्ति छोड तनुजा, देहभक्ति छोड !”

आगे बढकर, राजा जनक जीते जी जीवनमुक्त राजयोगी बन गए और अष्टावक्र महाऋषी बन गए, जिनका आत्मज्ञान मानवता के लिए प्रचलित है ।

॥ शान्तिपाठ ॥

ॐ द्यौ शान्तिरन्तरिक्षः शान्तिः पृथ्वी

शान्तिरापः शान्तिः रोषधयः शान्ति ।

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः

शान्तिब्रह्मा शान्तिः सर्वः शान्ति

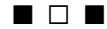
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥

ॐ शान्ति : शान्तिः शान्तिः ॐ

The spirit of the above Peace prayer is encapsulated in the following lines :

Om ~ May there be Peace in our divine thoughts. in the Sky, in the Earth. in the Waters. in the Vegetation (herbs, plants, and forests), in the Nature. and in all . May the true Peace be within ourselves also.

Om ~ Peace, Peace, Peace. The sound vibration of Om (ॐ) is symbolic of the eternal universal process of Creation, Preservation and Transformation.



मानव सरोवर

युगों से अखंड भारत, हमारा वतन, जिस में हिन्दु यह हमारी सभ्यता की जीवनशैली और अनुभूति रही है । जिसे ओम, एकोंकार, निर्वाण, और सूफी धुन 'हूँ हूँ हूँ' के ध्वनी तरंगों में पूरी तरहसे समाया गया है ।

कमल और कीचड के बीच एक गहरा कुदरती रिश्ता है, कीचड हमारा मन और उसी कीचड में से निकलता है सुन्दर कमल का फूल। सरस्वती ज्ञानरूप सुन्दर सोच है ।

भारत वर्ष के बीच मानव सरोवर में सदा कमल के फूल खिलते रहें । उनकी खुशबू और सौंदर्य भारत के नागरिकों को प्रभावित करती है ।



Picture of Symbolism :

Goddess Saraswati - Symbolism for knowledge and wisdom.

Lotus Flower - Self revealing beauty in the midst of silt, water and various life forms.

Pond or Lake - Nurturing of intermingled roots of various living species.

My nephew, Raghavendra Garde, Wing Commander (Retd), Indian Air Force, who is fluent in Sanskrit, Marathi, Hindi and Russian suggested, "Mama, for ending your book titled Narendra Modi, I suggest the following mantra (affirmation)"

ॐ सर्वेषां स्वस्तिर्भवतु

सर्वेषां शांतिर्भवतु

सर्वेषां पूर्णं भवतु

सर्वेषां मंगलं भवतु
सर्वेषां भवतुं सुखिनः
सर्वे संतु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यंतु
माकश्चित दुःख माप्नवेत
ॐ शांति शांति शांतिः

The universal and self enriching spirit of the above affirmation is encapsulated in the following lines :

May Auspiciousness and Peace be unto all;
May Fulness and Prosperity be unto all.
May all be happy !
May all be free from disabilities !
May all look into the goodness of others !
May none suffer from sorrow !

Finally, हम सब देशबंधू एक साथ 'जय हिंद' कहकर इस किताब को पूर्णविराम देते हैं।



Conclusion

Narendra Modi and his BJP Government started their governance of India since 26 May 2014. During this brief period, the leadership of Narendra Modi seems to be demonstrating its ability to carry out an ongoing dialogue with India's 1.25 billion citizens fairly well. Modi as the new leader is demonstrating his ability to communicate his clear vision of developing the Nation from ground up through affirmative democratic governance within the framework of the National Constitution.

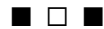
Narendra Modi exudes the qualities of effective leadership through his daily work and positive attitude. He speaks the language of the common citizen. It is the language of self empowerment and self confidence, short term successes instead of lofty ideals, and power of joint partnerships through an affirmative democratic governance. He is constantly aware of the support and blessings of his well wishers; while welcoming criticism from his opponents to better understand himself.

Mr. Modi has demonstrated his uncanny ability to connect with citizens ranging in age from children to seniors, tribes to intelligentsia, which represents one of the most diverse population culturally, linguistically, and religiously on the planet Earth. Equally so, he seems to connect comfortably with worldwide leaders of various countries, large as well as small, to engage in mutually beneficial trade relationships and betterment of humanity as a whole for its own good.

Mr. Modi seems to exude the promise of a world class statesman. His slow and steady rise from ground up with unconditional humbleness and humility to National leadership has the footprints of uncommon candor, wisdom, and judgement. He seems to have already demonstrated his executive and leadership abilities to a fair degree as the Chief Minister of Gujarat continuously for the past ten years before convincingly claiming the National leadership through fair democratic election process.

The challenges confronting India in the 21st Century are as complex and weighty for any leadership. Yet Mr. Modi's attitude of turning each problem into an opportunity holds promise for creative solutions to complex issues at home as well as globally.

The dynamics of time stands as the final witness, judge and jury.





About the Author

Suresh M. Deo was born in Nagpur, India, on 4th December 1932. He has lived his first 25 years in India and the latter 54+ years in the United States.

Suresh's passion for writing stemmed from the simple desire to better understand "That" which he had previously taken for granted.

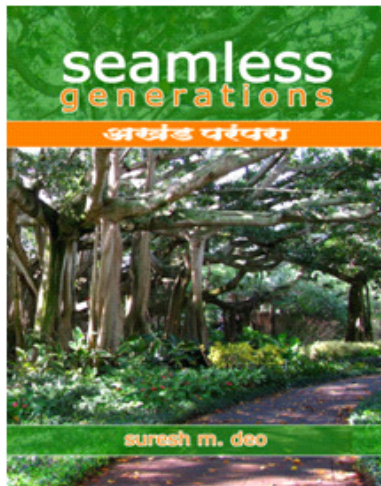
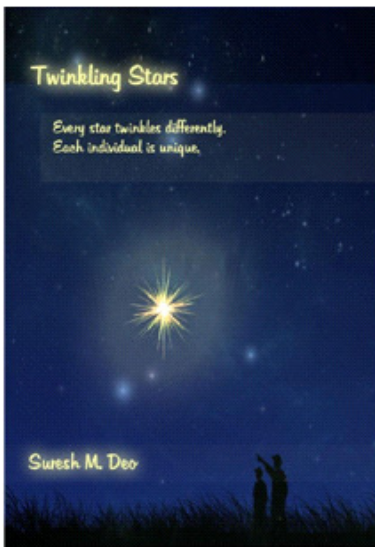
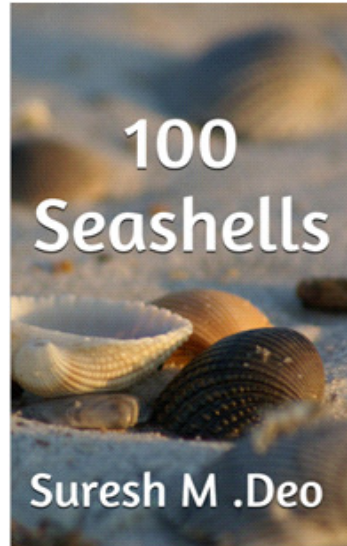
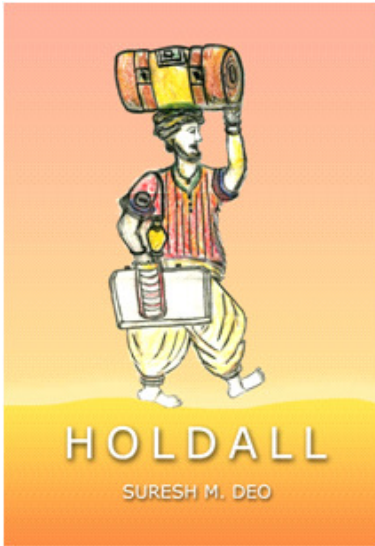
His past education saw him through Nagpur University in India to the University of Mississippi, affectionately known as Ole' Miss to its alumni. From there he went on to work in the Plastics and Composites industry for forty years. In hindsight, he realized that he had learnt enough about Chemical Engineering to confuse a chemist, enough about engineering to confuse an engineer, and enough about people to confuse himself.

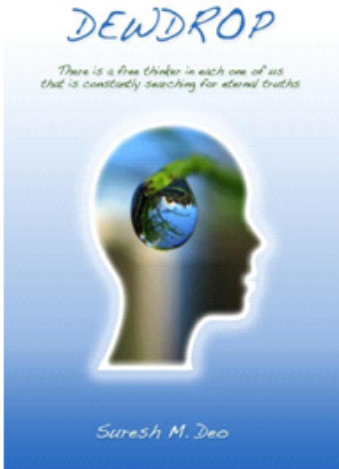
He recalls one of his most memorable moments in life to be a six-month trip around the world at the age of 30. It was then that he saw how all of us experienced the joys, aspirations, frustrations, and bewildering fears of the

unknown in life.

Suresh, and his wife Usha, spend their summer months in their home in Addison, Illinois, where they live in close proximity to their three sons. In the winter, they migrate to India where they enjoy the pleasant weather of Pune, Maharashtra.

Other Books by Suresh M. Deo





Lightning Bugs

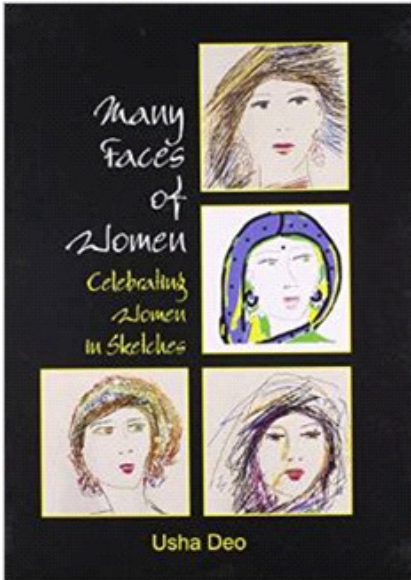
Available on Kindle

(http://www.amazon.com/s/ref=ntt_athr_dp_sr_1?_encoding=UTF8&field-author=Suresh%20Deo&search-alias=digital-text&sort=relevancerank)

Available on Scribd :

(https://www.scribd.com/suresh_deo)

Also Available :



http://www.amazon.com/Many-Faces-Women-Celebrating-Sketches/dp/9382337067/ref=sr_1_1?s=books&ie=UTF8&qid=1421446959&sr=1-1&pebp=1421446960341&peasin=9382337067

